घोषतरंग

वंशी

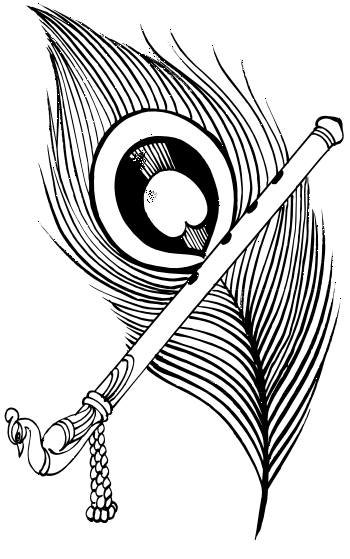

स्वयंसेवक का नाम.....

शाखा.....केंद्र.....

जिला .....प्रांत.....

प्रकाशक :

साहित्य संगम
74, रंगराव मार्ग, शंकरपुरम्
बेंगळूरु - 560 004
✆: 080-26610081

प्रकाशन क्रमांक : 43

लोकार्पण

युगाब्द 5116, 31 मार्च सन् 2014 ई.

प्रथम संस्करण - 1983
द्वितीय संस्करण - 1991
तृतीय संस्करण - 1999
चतुर्थ संस्करण - 2004
पंचम् संस्करण - 2010
षष्ठम् संस्करण - 2014

मूल्यः- ₹ 55

केवल व्यक्तिगत उपयोग के लिये

मुद्रकः
राष्ट्रोत्थान मुद्रणालय
गविपुरं मार्ग, केंपेगौडानगर
बेंगळूरु - 560 019.
✆: 080-2661 2730

प्रस्तावना

''सङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।''

यह एक निर्विवाद सत्य है कि कदम से कदम मिलाकर-चलने और स्वर से स्वर मिलाकर बोलने से सबके मन मिलते हैं और इसी का द्योतक है उपर्युक्त वेदमन्त्र। इसलिए समग्र हिंदू समाज को संगठित करने के लिए बद्धपरिकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यक्रमों में सांघिक व्यायाम, सांघिक संचलन और संघिक गायन को विशेष महत्व प्राप्त हो यह अत्यन्त स्वाभाविक है।

सांघिक व्यायाम एवं सांघिक संचलन के साथ तालबद्ध सुस्वर घोष भी हो तो सोने में सुहागे की बात हो जाती है और कार्यक्रमों में चार चाँद लग जाते हैं। किंतु इस दृष्टि से उपयोग में आ सकनेवाली किसी प्राङ्गणीय वादन की परम्परा प्राचीन में हमारे यहाँ थी या नहीं और थी तो उसका स्वरूप क्या था इस संबंध में अधिक कुछ ज्ञात नहीं हो पाया है। ऐसी स्थिति में घोष की पाश्चात्य पद्धति का अङ्गीकार करना क्रमप्राप्त था। किन्तु उसके भारतीयकरण की दिशा में हमारे अनेक बंधु सक्रिय हुए जिसके परिणामस्वरूप भारतीय रागों एवं तालों पर आधारित अनेक नवीन रचनाओं का निर्माण एवं प्रयोग अब तक हुआ है। उन्हीं रचनाओं का संकलन 'घोष-तरंग' नामक प्रस्तुत पुस्तिका में हुआ है।

संगीत को लिपिबद्ध करने की कुछ शैलियाँ भारत में प्रचलित हैं। इनमें भातखंडे की स्वरलिपि का प्रचलन सर्वाधिक है। घोष रचनाओं के लेखन हेतु कतिपय आवश्यक संशोधनों सहित उसी स्वरलिपि का प्रयोग इस पुस्तिका में हुआ है। स्वरलिपि सम्बन्धी विस्तृत जानकारी 'घोष परिचय' नामक पुस्तिका में दी गई है। रचनाओं की शुद्धता की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। प्रस्तुत संकलन के उपयोग द्वारा सर्वत्र समरूपता स्थापित हो सकी तो इस पुस्तिका का प्रकाशन सार्थक माना जा सकेगा।

कुप्. सी. सुदर्शन

❖ ❖ ❖

मनोगत

युगाब्द ५१११ के विजयादशमी के शुभदिन 'घोष तरंग' का पंचम संस्करण आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अतीव आनंद की अनुभूति हो रही है। इस कृति का प्रथम संस्करण १९८३ में, द्वितीय संस्करण १९९१, तृतीय संस्करण १९९९ व चतुर्थ २००४ में प्रकाशित हुआ था।

पुस्तक के प्रस्तुतिकरण में नागपुर, पुणे तथा बेंगलूर के अनेक बंधुओं ने अपार परिश्रम, सहयोग एवं मार्गदर्शन किया है एतदर्थ हम उनके आभारी हैं। राष्ट्रोत्थान मुद्रणालय, बेंगळूरु ने पुस्तक का सुंदर मुद्रण किया है इसलिए हम उनके भी आभारी हैं। आशा है कि विविध वाद्यों की रचनाओं का यह प्रस्तुतिकरण, शिक्षार्थियों के लिए उपादेय सिद्ध होगा। इसे और भी अधिक उपयुक्त बनाने हेतु आपके सुझावों का सदैव स्वागत है।

प्रकाशक

बेंगळूरु
पंचम संस्करण
विजयादशमी
२८ सितम्बर, सन् २००९ ई.
कलियुगाब्द ५१११

वंशी रचना ॐ अंतरंग

प्रचलनगति

1. भूप 1
2. मीरा 2
3. केदार 3
4. तिलककामोद 4
5. तिलंग 5
6. पहाड़ी 6
7. शिवरंजनी 7
8. दुर्गा 8
9. भारतम् 10
10. वलचि 12
11. सुरभि (बागेश्री) 13
12. हंसध्वनि 14
13. हंसवाहिनी 15
14. हररंजनी 16
15. शरावती 17
16. देशकार 18
17. श्रीपाद (मांड) 19
18. कल्याणी 20
19. प्रसाद 21
20. शंकरा 22
21. राजश्री 24
22. खमाज 26
23. कैरलि 28
24. हरिकांबोजी 29
25. बदरी 30
26. केकावली 32
27. गौडमल्हार 34
28. रामरंजनी 36
29. मधुकर 38
30. धानी 39
31. विजया 40
32. गणेश 42
33. पारिजातम् 44
34. गुणवंत 46
35. कालगति 48
36. विष्णुपदी 50
37. भीमपलास 52
38. वंदेमातरम् 54
39. माधवनित्या 56
40. जननी 58
41. बंगश्री 59
42. गोवर्धन 60

मंदगति

1. ध्वजारोपणम् 62
2. कर्नाटकी 63
3. शिवराज: 64
4. वेलावलि 66
5. प्रशांति 67
6. शारदा 68
7. कलिंगड़ा 69
8. देवदत्त 70
9. इंद्रप्रस्थ 72
10. तुंगा 73
11. मारवा 74
12. तोड़ी 76
13. बागेश्री 77
14. कल्याण 78
15. केतकी 79
16. कलावती 80
17. केशवश्री 82
18. आसावरी 85
19. आरुणी 86
20. समर्पण 89
21. केशव: 90

स्वर लेखन

घोष रचनाओं का लेखन करने के लिए प्रयुक्त स्वरलिपि, उससे, संबंधित शब्दों की परिभाषा तथा अन्य संबंद्ध विषयों का संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया गया है। 'घोष परिचय' पुस्तक से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

स्वर: वाद्यों के वादन से निर्मित कंपित वायुमंडल के ध्वनितरंगों से नाद सुनाई देता है। ऐसे संगीतोपयोगी नादस्थानों को 'स्वर' कहते हैं।

वंशी : वंशी में **स री ग म प ध नि** इस क्रम से सात स्वर बजाए जाते हैं। प्रत्येक स्वर का एक नाम तथा निश्चित कंपन संख्या होती है। री ग ध नि यह चार स्वर अपनी निश्चित क्षमता से कम कंपन के तथा म अधिक कंपन का भी हो सकता है। इन पाँचों को 'विकृत स्वर' कहते हैं। इनके स्वराक्षरों के नीचे छोटी अधोरेखा रहती हैं। ये स्वराक्षर निम्न प्रकार से लिखते हैं।

स री̲ री ग̲ ग म म̲ प ध̲ ध नि̲ नि

स्वर-सप्तक: सात स्वरों के स्वरसमूह को 'स्वर-सप्तक' कहते हैं। सहजता से फूँक लगाने पर 'मध्य सप्तक' मिलता है। इसके नीचे से मिलने वाले सात स्वरों को 'मंद्र सप्तक' एवं ऊपरी स्तर के सात स्वरों को 'तार सप्तक' कहते हैं। ये तीनों स्वरसप्तक निम्नानुसार लिखते हैं।

मंद्र - **स़ री़ ग़ म़ प़ ध़ नि़** **मध्य** - **स री ग म प ध नि** **तार** - **सं रीं गं मं पं धं निं**

तीनों सप्तकों में विकृत-स्वरों के सभी संभाव्य प्रकार नीचे दिए है।

मंद्र - **री़̲ ग़̲ म़̲ ध़̲ नि़̲** **मध्य** - **री̲ ग̲ म̲ ध̲ नि̲** **तार** - **री̲ं ग̲ं म̲ं ध̲ं नि̲ं**

राग - स्वरों के विशिष्ट संयोगों से रागों का निर्माण होता है। संयोग अनेक प्रकार के हो सकते हैं, किंतु जिन स्वर-संयोगों में रंजकता होती है, वे ही 'राग' कहलाते हैं। स्वरों में आरोह-अवरोह, वादी-संवादी, वर्ज्यावर्ज्य आदि भेद हैं। इनका ध्यान रखकर स्वरों का जो विन्यास किया जाता है, उसी से 'राग' का आविष्कार होता है।

शंख - सामान्यतः शंख वादन में कुल पाँच स्वरों का प्रयोग होता है। वे निम्नानुसार हैं।

सृ पृ स ग प

इसके आगे **नि̲** तथा **सं** स्वर भी आते है, जिनका उपयोग कभी - कभी किया जाता है।

आनक तथा तालवाद्य - पणव, आनक, खर्जानक, त्रिभुज, झल्लरी जैसे तालवाद्यों के वादन का स्वरलेखन निम्न प्रकार से किया जाता है। उन्हें ध्वन्याक्षर कहते हैं।

वाद्य	**ध्वनि**	**ध्वन्याक्षर**
पणव	ध्वंकार	**ध्वं**
खर्जानक	धंकार	**धं**
आनक	तंकार	**त**
त्रिभुज	टंकार	**टं**
झल्लरी	झंकार	**झं**

शारिकाओं द्वारा आनक पर आघात करने से 'तंकार' उत्पन्न होता है। आनक के वादन विन्यास को व्यक्त करने के लिए 'त' के अतिरिक्त और भी ध्वन्याक्षरों का उपयोग किया जाता है, जिनका विवरण निम्नानुसार है।

अपेक्षित वादन	**ध्वन्याक्षर**
* दोनों शारिकाओं से एक साथ तंकार	**थ**
* दोनों शारिकाओं से एक साथ अनुतंकार	**थ्र**
* प्रमुख तंकार के किंचित् पहले दूसरे शारिका से -	
१. एक तंकार	**त्त**
२. अनुतंकार	**त्र**

* केरवा रणनः दा बा दा बा त ^त त ^त त ^त त ^त = **त्र**

* खेमटा रणनः दा त ^तत = **त्र**

* शारिकाएँ परस्पर टकराने से आनेवाली 'टिक्' ध्वनि : **+**

रणन - तंकार को यदि नियंत्रित नहीं किया, तो शारिका आवरण पर दो-चार बार उछलती है। क्रमशःक्षीण होते जाने वाले इस नाद को 'अनुतंकार' कहते हैं। इनका योग्य नियन्त्रण कर, (१) केवल तंकार, (२) एक तंकार एवं एक अनुतंकार अथवा (३) एक तंकार एवं दो अनुतंकार प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार के तंकारनुवर्ति अनुतंकार के साथ, तांत के प्रत्याघाती कंपनों को मिलाकर 'रणन' बनता है। केरवा रणन में चार तंकारानुवर्ति अनुतंकार तथा खेमटा रणन में एक तंकार के बाद दो अनुतंकारों का वादन अपेक्षित है। खेमटा ताल में रणन संघ का वैशिष्ट्य है।

मात्रा - स्वर लेखन में जिस प्रकार कौनसा स्वर बजेगा, यह स्पष्ट लिखते है, उसी तरह वह स्वर का कितने समय तक वादन होगा यह भी निर्देशित करना आवश्यक है। इस कालमापन के इकाई को 'मात्रा' कहते हैं। इसका कोई अलग चिन्ह नहीं है।

जब कोई स्वराक्षर या ध्वन्याक्षर अकेला लिखा जाता है, तब उसका अर्थ है कि वह स्वर या ध्वनि एक मात्रा की है। जैसे - **स री ग त टं झं त्र** आदि।

मात्रांश - जब एक 'मात्रा' में एक से अधिक स्वर या ध्वनि आते हैं तब उन स्वरों या ध्वनियों के लिए अपेक्षित कालमान को 'मात्रांश' कहते हैं। एक मात्रा में आने वाले इन स्वराक्षरों या ध्वन्याक्षरों के नीचे एक कोष्ठक लगाया जाता है।

स - १ मात्रा में १ स्वर (एक स्वर १/२ सेकंड का होगा)

सरी - १ मात्रा में २ स्वर (प्रत्येक स्वर १/४ सेकंड का होगा)

सगप - १ मात्रा में ३ स्वर (प्रत्येक स्वर $^{१}/_{६}$ सेकंड होगा)

ततत त - १ मात्रा में ४ स्वर (प्रत्येक स्वर $^{१}/_{८}$ सेकंड का होगा)

रचना-शीर्षक के दाहिनी ओर ताल के पश्चात् दिया हुआ अंक (जैसे - ३६०, २४०, १८०, १२०, १००आदि) एक मिनट में उस रचना की कितनी मात्राएं बजेगी यह दर्शाता है। उदाहरणार्थ, 'खेमटा ३६०', ऐसा लिखा है, तो संचलन की गति एक मिनट में १२० रहेगी, किंतु मात्राएं ३६० बजेगी।

अवग्रह - किसी भी स्वर को एक या अधिक मात्रा या मात्रांश के लिए दीर्घ करना हो, तो उस स्वर-विस्तार को '**ऽ**' इस अवग्रह चिन्ह से दर्शाया जाता है; तथा उसका उच्चारण '**अ**' होता है। उदाहरणार्थ, यदि एक मात्रा का कालांश $^{१}/_{२}$ सेकंड हो, तो-

स रीग ऽ ..... एक मात्रा **ग** विस्तार ($^{१}/_{२}$ सेकंड)

पऽऽऽ ..... तीन मात्रा **प** विस्तार ($१^{१}/_{२}$ सेकंड)

सऽसस ..... प्रथम '**स**' का १ मात्रांश विस्तार ($^{१}/_{८}$ सेकंड)

सऽऽग ..... प्रथम '**स**' का २ मात्रांश विस्तार ($^{१}/_{४}$ सेकंड)

यति - किसी भी स्वर का (एक या आधिक मात्रा या मात्रांश के लिए) विराम करना हो, तो '**–**' इस यति चिन्ह से किया जाता है। उसका उच्चारण '**य**' होता है।

उदाहरणार्थ, यदि एक मात्रा का कालांश $^{१}/_{२}$ सेकंड हो तो -

पमध - : '**ध**' के बाद १ मात्रा यति ($^{१}/_{२}$ सेकंड)

तत–त : दूसरे '**त**' के बाद १ मात्रांश यति ($^{१}/_{८}$ सेकंड)

स– : **'स'** के बाद १ मात्रांश यति ($^{१}/_{४}$ सेकंड)

–प : प्रथम १ मात्रांश यति ($^{१}/_{४}$ सेकंड) बाद में **'प'** ($^{१}/_{४}$ सेकंड)

अभ्यास की दृष्टि से प्रारंभ में यति के स्थान पर **'य'** कह सकते है। बाद में **'य'** का उच्चारण छोड कर, मन में उतने यति की गिनती करते हुए कहिए या बजाइए।

अवग्रह तथा यति साथ साथ आने पर लेखन निम्नानुसार होगा।

री म ऽ - : १ मात्रा **म** विस्तार के बाद १ मात्रा यति ($^{१}/_{२}$ सेकंड)

सऽ–ग **:** १ मात्रांश **स** विस्तार के बाद १ मात्रांश यति ($^{१}/_{८}$ सेकंड)

अवग्रह तथा यति को स्वर जैसा ही माना जाता है। इसलिए इनके चिन्ह भी स्वराक्षर या ध्वन्याक्षर के स्तर पर ही अंकित किए जाते हैं।

ताल : मात्राओं की विशिष्ट, नियमबद्ध एवं रंजक योजना को 'ताल' कहते हैं। मात्राओं के इस विन्यास में जब ह्रस्व-दीर्घता, आवर्तनात्मक गति, अवसान अथवा वस्तुमान, समांतरता, यति तथा कुछ बोल होते हैं, तब इसको 'ताल' की संज्ञा प्राप्त होती है।

लेखन करते समय प्रयुक्त गट, गण, चरण आदि के चिन्ह तथा वर्णन निम्नानुसार है।

गट : ताल के अनुसार एक या अधिक मात्राओं से बने विशिष्ट समूह को 'गट' कहते हैं। गट-चिन्ह ',' ऐसा होता है।

गण : दो या अधिक गटों के समूह को 'गण' कहते हैं। यह चिन्ह '|' ऐसा होता है, जिसे 'गणदंड' कहते हैं।

चरण : दो या अधिक गण एकत्र आने पर अथवा गणों के ताल-आवर्तन से 'चरण' बनता है। इस चिन्ह '‖' को 'चरणदंड' कहते है, जिसे चरण के प्रारंभ तथा अंत में अंकित करते हैं।

पुनश्चरण : किसी एक चरण का पुनर्वादन अपेक्षित होने पर, उस चरण के अंत में 'पुनश्चरण' का ''ः||''यह चिन्ह लगाया जाता है।

केरवा ताल : इसमें ४ मात्राएं तथा उसके १ गण में २ मात्राएं होती है। केरवा-१२० लय के अनुसार १ मिनट में $^{१}/_{२}$ सेकंड की १२० मात्राओं का वादन होता है। यह ताल १०० तथा १६० लय का भी होता है, जिनका प्रयोग कुछ उद्घोषों में किया गया है।

खेमटा ताल : उसमें १२ मात्राएं, तथा इसके १ गण में ६ मात्राएं होती है। इस ताल में संचलन करते समय $^{१}/_{६}$ सेकंड की ३६० मात्राओं का वादन होता है।

दादरा ताल : यह ताल ६ मात्राओं का तथा इसके एक गण में ३ मात्राएं होती है। लय १२० का हो, तो हरेक मात्रा $^{१}/_{२}$ सेकंड की होती है। यह ताल १८० लय का भी होता है।

झपताल : झपताल १० मात्राओं का तथा प्रत्येक गण में ५ मात्राएं होती है। इसके एक मिनट में $^{१}/_{४}$ सेकंड की २४० मात्राओं का अथवा $^{१}/_{२}$ सेकंड की १२० मात्राओं का वादन होता है।

रूपक ताल : इसमें सात मात्राएं होती है। इसके १ मिनिट में $^{१}/_{२}$ सेकंड की १२० मात्राओं का वादन होता है।

लय : एक मिनट में बजाए जाने वाली मात्राओं की संख्या उस रचना का 'लय' होती है।

सांतर : शंख, वंशी आदि वाद्यों में मुखाग्र पर 'जिह्वाघात' (Tonguing) करते हुए प्रत्येक स्वर का अलग से बजाना ही 'सांतर' वादन कहलाता है। स्वरांतर का अन्य चिन्ह न लिखा हो, तो वादन 'सांतर' है ऐसा समझना चाहिए।

निरंतर : इन वाद्यों में 'जिह्वाघात' का प्रयोग न करते हुए एक ही फूंक में स्वर बदलने से 'निरंतर' वादन होता है। अर्धचंद्राकृति आकार का ' ⌒ ' यह चिन्ह संबंधित स्वरों के ऊपर लगाकर निरंतर वादन सूचित किया जाता है।

अपना घोष प्रांगणीय कार्यक्रमों के लिए प्रयुक्त होने के कारण हमारा वादन सांतर-प्रधान है। तथापि रंजकता की दृष्टि से कहीं कहीं निरंतर वादन भी किया जाता है।

आघात: किसी विशिष्ट स्वर का वादन उसके सहज स्तर से भी अधिक जोर लगाकर करना अपेक्षित है, तो उस स्वर के ऊपर ‘ ^ ’ यह ‘आघात-चिन्ह’ अंकित करते हैं।

आघात के अन्य प्रकार, जिनका प्रयोग संचलन की रचनाओं में नहीं होता है, बल्कि उद्‌घोष में होता हैं, निम्नानुसार है।

प (ऊपर <)	इस स्वर की ध्वनि प्रारंभ में कम तथा धीरे धीरे अंत में बढानी चाहिये।
ग (ऊपर >)	इस स्वर की ध्वनि आरंभ में अधिकतम तथा अंत में धीरे धीरे न्यूनतम होगी।
म (ऊपर <>)	इस स्वर की ध्वनि क्रमशः प्रारंभ में न्यूनतम, मध्य में अधिकतम तथा अंत में पुनः न्यूनतम आएगी।

प्रभावी परिणाम केलिए इन चिन्हों से अंकित आघातयुक्त वादन का प्रयोग किया जाता है।

लयभंग - किसी विशिष्ट (विशेषतः अंतिम) स्वर का वादन, उसके समान्य कालमान से अधिक कालमान के लिए अपेक्षित हो, तो उसे ‘लयभंग’ के ‘ ⟶ ’ इस चिन्ह से सूचित करते हैं।

दीर्घयति - यदि ‘यति’ एक गण से भी अधिक हो, तो उसे ‘दीर्घयति’ के ‘।—२—।’ इस चिन्ह से दर्शाया जाता है। इस का अर्थ है, दो गणों की यति या विराम। ‘**२**’ के स्थान पर अन्य अंक लिखकर उतने गणों की यति सूचित करते हैं।

क्रमभेद - जब पुनश्चरण में अंतिम गणों का वादन भिन्न प्रकार से अपेक्षित होता है तब इन गणों को आवृत्त करने वाला कोष्ठक ऊपर से लगाकर उसे ‘**१**’ क्रमांक देते है तथा इसी प्रकार के कोष्ठक में अपेक्षित भिन्न वादन के गण लिखकर उसे ‘२’ क्रमांक देते है। इसे ‘क्रमभेद’ कहा जाता है। |¹ :‖ ² | ‖

इसका अर्थ यह होता है कि चरण दूसरी बार बजाते समय क्र. **१** कोष्ठक से आवृत्त गणों के बजाय क्र. **२** कोष्टक से आवृत गणों का वादन करना।

कण-स्वर - मुख्य स्वर का वादन करते उसके पहले या बाद में किसी अन्य स्वर का अत्यल्प, स्पर्श-मात्र वादन अपेक्षित

हो, तो इन अत्यल्प कालमान के स्वरों को कण-स्वर कहते हैं। स्वराक्षर या ध्वन्याक्षर को आधा लिखकर कण-स्वर दर्शाते हैं। उदा. **स्, र्, ग्, म्, ध्, न्, क्त** में **क्, त्त** में **त्** आदि.

ध्रुव पद : रचना के जिस पंक्ति को प्रत्येक चरण के बाद बजाया जाता है उसे 'ध्रुवपद' कहते हैं तथा उसके अंत में इसका संक्षिप्त रूप '।।ध्रु।।' अंकित करते हैं।

प्रस्ताव पद : रचना का वृत्त तथा शैली सूचित करने वाले चरण को 'प्रस्ताव पद' कहते हैं। यह रचना के प्रारंभ में आता है।

सेतु पद : रचना के वृत्त तथा शैली बदल सूचित करते समय, दो चरणों के बीच आनेवाले चरण को 'सेतु पद' कहते हैं।

रचना लेखन : प्रांगणीय तथा सांघिक वादन के लिए उपयुक्त ऐसी जो स्वरावली बनायी जाती है, उसे 'रचना' कहते हैं। इसमें अनेक चरण हो सकते हैं। अच्छी रचना का प्रत्येक चरण अपने आप में एक सांगीतिक वाक्य (Musical Sentence) अथवा रचना का स्वयंपूर्ण भाग जैसा रहता है।

लेखन के आरंभ में शीर्षक लिखते है। इस के प्रथम (याने बाएं कोने के) भाग में 'वाद्य का नाम' मध्य में 'रचना का नाम' (कोष्टक में उसका विशेष नाम या राग का नाम) तथा दाहिने कोने में 'ताल व लय' का उल्लेख करते हैं।

वंशी रचना-शीर्षक के नीचे संबंधित रागों का आरोहण - अवरोहण दिया गया है। रचना अभ्यास करने से पहले इन आरोहण - अवरोहण का पर्याप्त अभ्यास करने से रचना अभ्यास करने में सुविधा होगी।

रचना-लेखन के प्रारंभ में नाद-ब्रह्म का आद्याक्षर ।। ॐ ।। ऐसा लिखना चाहिए। सामान्यतः एक पंक्ति में चार गण लिखते हैं।

सूचनायें

१. ध्वजारोपणम् और केशवः इन रचनाओं का वादन केवल संघ कार्यक्रमों में ही करना चाहिए। अन्य संस्थाओं द्वारा इनका वादन वर्जित है।

२. किसी भी कार्यक्रम में नैमित्तिकानि केवल एक बार ही बजाना चाहिए।

३. वंशी का अभ्यास खड़े होकर करना उचित है। थोड़ा अभ्यास होने के बाद प्राथमिक पाठ और सभी रचनायें मितकाल में करना लाभदायक सिद्ध होगा।

४. अच्छे वादन के लिए वाद्य का संरक्षण भी जरूरी है।

* * *

वंशी स्वर परिचय

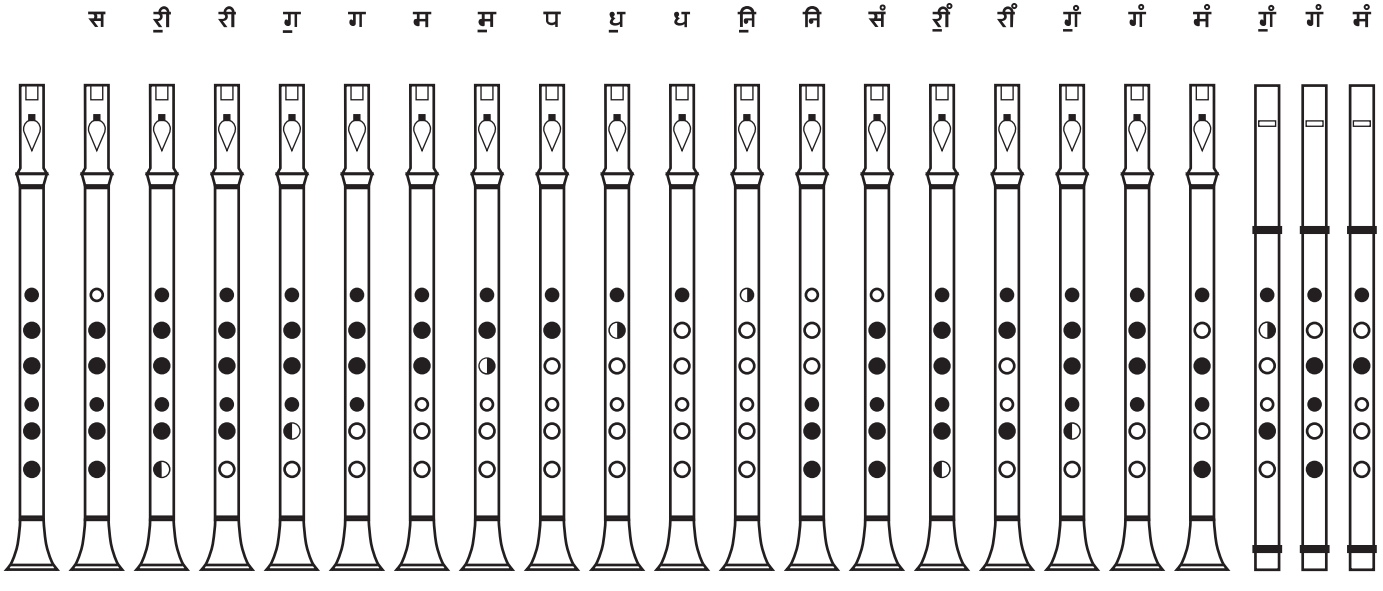

वंशी प्राथमिक पाठ

1 ‖ स ऽ ऽ ऽ – | री ऽ ऽ ऽ – | ग ऽ ऽ ऽ – | म ऽ ऽ ऽ – |

| प ऽ ऽ ऽ – | ध ऽ ऽ ऽ – | नि ऽ ऽ ऽ – | सं ऽ ऽ ऽ – |

| सं ऽ ऽ ऽ – | नि ऽ ऽ ऽ – | ध ऽ ऽ ऽ – | प ऽ ऽ ऽ – |

| म ऽ ऽ ऽ – | ग ऽ ऽ ऽ – | री ऽ ऽ ऽ – | स ऽ ऽ ऽ – ‖

2 ‖ स स स स – | री री री री – | ग ग ग ग – | म म म म – |

| प प प प – | ध ध ध ध – | नि नि नि नि – | सं सं सं सं – |

| सं सं सं सं – | नि नि नि नि – | ध ध ध ध – | प प प प – |

| म म म म – | ग ग ग ग – | री री री री – | स स स स – ‖

3 ‖ स ऽ – री ऽ – | ग ऽ – म ऽ – | प ऽ – ध ऽ – | नि ऽ – सं ऽ – |

| सं ऽ – नि ऽ – | ध ऽ – प ऽ – | म ऽ – ग ऽ – | री ऽ – स ऽ – ‖

4 ‖ सं ऽ – ध ऽ – | सं ऽ – ध ऽ – | नि ऽ – म ऽ – | नि ऽ – म ऽ – |

| स ऽ – री ऽ – | ग ऽ – प ऽ – | स ऽ – री ऽ – | ग ऽ – प ऽ – ‖

5 ‖ स री ग म | प ध नि सं– | सं नि ध प | म ग री स– ‖

6 ‖ सस रीरी | गगगग म– | पप धध | निनिनिनि सं– |
| सं सं निनि | धधधध प– | मम गग | रीरीरीरी स– ‖

7 ‖ स री ग स– | री ग म स– | ग म प स– | म प ध स– |
| प ध नि स– | ध नि सं स– | सं नि ध स– | नि ध प स– |
| ध प म स– | प म ग स– | म ग री स– | ग री स स– ‖

8 ‖ स री ग म– | री ग म प– | ग म प ध– | म प ध नि– | प ध नि सं– |
| सं नि ध प– | नि ध प म– | ध प म ग– | प म ग री– | म ग री स– ‖

9 ‖ सरी सरी | ग ग– | रीग रीग | म म– | गम गम | प प– |
| मप मप | ध ध– | पध पध | नि नि– | धनि धनि | सं स– |
| सं नि सं नि | ध ध– | निध निध | प प– | धप धप | म म– |
| पम पम | ग ग– | मग मग | री री– | गरी गरी | स स– ‖

वंशी प्रगत पाठ

1 ‖ स s – | सरीस s – | सरीगरीस s – | सरीगमगरीस s – | सरीगमपमगरीस s – |

| सरीगमपधपमगरीस s – | सरीगमपधनिधपमगरीस s – |

| सरीगमपधनिसंनिधपमगरीस s – | सं s – | संनिसं s – | संनिधनिसं s – |

| संनिधपधनिसं s – | संनिधपमपधनिसं s – | संनिधपमगमपधनिसं s – |

| संनिधपमगरीगमपधनिसं s – | संनिधपमगरीसरीगमपधनिसं s – ‖

2 ‖ सरी सरी | ग s – | रीग रीग | म s – | गम गम | प s – |

| मप मप | ध s – | पध पध | नि s – | धनि धनि | सं s – |

| संनि संनि | ध s – | निध निध | प s – | धप धप | म s – |

| पम पम | ग s – | मग मग | री s – | गरी गरी | स s – ‖

3 ‖ स s – स री | स ग स म | स प स ध | स नि स सं |

| सं s – सं नि | सं ध सं प | सं म सं ग | सं री सं स ‖

4 ‖ सग रीम | गप मध | पनि धसं | निरीं सं– |

| रींनि संध | निप धम | पग मरी | गस नि़– ‖

5 ‖ स सरीगम | री रीगमप | ग गमपध | म मपधनि | प पधनिसं |
| सं संनिधप | नि निधपम | ध धपमग | प पमगरी | म मगरीस‖

6 ‖ सस रीसरीरी | गग ममसम | पप धससध | निनि संसंसंस |
| संसं निसनिनि | धध पपसप | मम गससग | रीरी सससस‖

7 ‖ ससस , रीसरी | गगग , मसम | पपप , धसध | निनिनि , संस– |
| संसंसं , निसनि | धधध , पसप | ममम , गसग | रीरीरी , सस– |

8 ‖ ससस , सरीग | रीसरी , रीगम | गसग , गमप | मसम , मपध |
| पसप , पधनि | धसध , धनिसं | निसनि , निसंरीं | गंस– , गंस– |
| गंसगं , गंरींसं | रींसरीं , रींसंनि | संससं , संनिध | निसनि , निधप |
| धसध , धपम | पसप , पमग | मसम , मगरी | सस– , सस–‖

9 ‖ सरी , सरीग | रीग , रीगम | गम , गमप | मप , मपध |
| पध , पधनि | धनि , धनिसं | संनि , संनिध | निध , निधप |
| धप , धपम | पम , पमग | मग , मगरी | गरी , गरीस ‖

10 ‖ सरीग , सरीगम | रीगम , रीगमप | गमप , गमपध | मपध , मपधनि |
| पधनि , पधनिसं | संनिध , संनिधप | निधप , निधपम | धपम , धपमग |
| पमग , पमगरी | मगरी , मगरीस | गरीस , गरीसनि़ | रीसनि़ , रीसनि़प़ ‖

वंशी   **भूप**   केरवा-१२०

आरोहण - स री ग प ध सं   **अवरोहण** - सं ध प ग री स

॥ॐ॥	धसं	धप	|	गरी	स	|	ध़	सरी	|	गरी	गप |
|	धसं	धप	|	गरी	स	|	ध़	सरी	|	ग	ऽ– :॥
॥	गरी	गप	|	धप	ध	|	गप	धसं	|	धप	ग |
|	सं	धप	|	गरी	स	|	ध़प	गरी	|	स	ऽ– :॥
॥	संध	सं	|	पध	ग	|	रीप	गध	|	पसं	धरीं |
|	संध	सं	|	पध	ग	|	धप	गरी	|	स	ऽ– :॥

वंशी **मीरा** **खेमटा-३६०**

आरोहण - स री ग प ध सं **अवरोहण** - सं ध प ग री स

‖ॐ‖ संSसं , धपS | धSध , पगरी | सSS , सSस | सSS , S– – ‖

‖ संSS , धSS | पSS , गSS | रीSग , पSध | संS– , पSध |

| संSS , धSS | पSS , गSS | रीSग , सSध़ | सSS , S– – :‖

‖ ससस , सSस | ध़SS , सSS | रीS– , रीSरी | रीSS , S– – |

| गगग , गSग | सSS , गSS | पS– , पSप | पSS , S– – |

| धधध , धSध | गSS , धSS | संS– , संSसं | संSS , – –ध |

| संSS , संSसं | संSS , – –ध | संSS , संSसं | संSS , S– – ‖

‖ संSS , धSS | पधप , गSS | धSS , पSS | गपग , रीSS |

| सSS , रीSS | गपग , पSS | धSप , गSरी | सSS , S– – :‖

वंशी　　　　　　　　　　　**केदार**　　　　　　　　　　　केरवा-१२०

आरोहण - स री स म प ध प नि ध सं　　**अवरोहण** - सं नि ध प म॒ प ध नि॒ ध प म री स

||ॐ||　स　मग　|　पम॒　धप　|　सं　धप　|　म॒प　म　|

|　स　मग　|　पम॒　धप　|　म　री　|　स　ऽ–　:||

||　प　म॒प　|　धनि॒　धप　|　म॒प　धप　|　म　रीस　|

|　प　म॒प　|　धनि॒　धप　|　म॒प　धनि　|　सं　ऽ–　:||

||　संनि　रींसं　|　धप　म॒प　|　धनि॒　धप　|　म॒पधप　म　|

|　संनि　रींसं　|　धप　म॒प　|　म　रीस　|　नि़री　स　:||

वंशी

तिलककामोद

केरवा-१२०

आरोहण - स री ग म प ध म प सं **अवरोहण** - सं प ध म ग स री ग स ऩि स

||ॐ|| संऽसंसं संसं | पध मग | री ग | स– ऩिऩि ||

|| प़ऩि सरी | ग सरी | प मप | ग सऩि |

| प़ऩि सरी | ग सऩि | स ऽ | ऽ– – :||

|| सरी मप | धप मप | ग स | ऩि प़ |

| सरी मप | धप मप | सं ऽ | ऽ– – :||

|| सं ऽरीं | निसं पध | मग सरी | मप नि |

| सं ऽरीं | निसं पध | मग सऩि | स ऽ– :||

|| सं ऽ | प ध | मग रीग | स ऩि |

| प़ प़ | ऩि ऽ | सरी मप | धप मप |

| सं ऽ | प ध | मग रीग | स ऩि |

| प़ प़ | ऩि ऽ | स ऽ | ऽ– – :||

वंशी — तिलंग — केरवा-१२०

आरोहण - स ग म प नि सं **अवरोहण** - सं नि॒ प म ग स

॥ॐ॥	पनि	सं	नि॒प	म	ग	ग	स	ऽ–	॥
॥	नि़स	ग	सग	म	पनि॒	पम	गम	ग	।
।	स	ग	सग	म	प	नि	सं	ऽ–	:॥
॥	संनि	सं	नि॒प	म	गम	पनि	सं	संसं	।
।	संनि	सं	नि॒प	म	ग	ऽ	स	ऽ–	:॥
॥	गंसं	ऽरीं	संनि	सं	नि॒प	ऽनि॒	पम	ग	।
।	सग	मप	नि॒प	नि	सं	ऽ	सं	ऽ–	:॥

वंशी   पहाड़ी   केरवा-१२०

आरोहण - स री ग प ध सं   **अवरोहण** - सं नि ध प म ग री स

||ॐ|| ध़स स | रीम म | –ग रीग | री स– ||

|| ध़स स | रीम म | पध ध | पम गरीसरी |

| रीप प | मग रीस | री सस |¹ स रीसध़ऽ :||

|² स ऽ– ||

|| पध मप | धसं सं | संरीं संरींगंऽ | रीं सं |

| संरीं संरींगंऽ | रीं संरीं | सं ऽ |¹ निध प :||

|² ऽ– – ||

|| पप पध | धसं सं | संरीं संरीं | संनि धप |

| रीम म | पध निध |¹ प ध | नि सं :||

||² प ऽ | मग रीस ||

वंशी

शिवरंजनी

केरवा-१२०

आरोहण - स री ग॒ प ध सं **अवरोहण** - सं ध प ग॒ री स

॥ॐ॥	स	ऽरी	ग॒	ग॒	प	ऽध	पग॒	रीस	|
|	ध़	ऽस	री	री	स	ऽ	ऽ–	–	:॥
॥	सस	ऽरी	ग॒प	ऽप	रीरी	ऽग॒	पध	ऽध	|
|	संध	ऽप	धप	ऽग॒	पग॒	ऽरी	स	ऽ–	:॥
॥	सरी	ग॒	पध	सं	धप	ग॒	सग॒	री	|
|	सरी	ग॒	पध	सं	ध	ग॒ंरीं	सं	ऽ–	:॥
॥	ग॒ं	रीं	सं	धप	ग॒री	स	रीग॒	प	|
|	धसं	ऽसं	धप	ग॒री	स	ऽ	ऽ–	–	:॥

वंशी

दुर्गा

केरवा-१२०

आरोहण - स री म प ध सं **अवरोहण** - सं ध प म री स

॥ॐ॥	ध़	स	रीम	प	ध–	मरी	स–	–	॥
॥	रीध़	स	मरी	प	धसं	धम	पम	रीस	।
।	रीध़	स	मरी	प	धसं	धम	प	ऽ–	:॥
॥	मप	ध	पध	सं	धरीं	संध	प	पध	।
।	मप	ध	पध	सं	धप	मरी	स	ऽ–	:॥
॥	रीऽरीरी	रीरी	सध़	स	रीऽरीरी	रीरी	मध	प	।
।	धऽधध	धध	संऽसंसं	संसं	रींऽरींरीं	रींरीं	रीं	ऽ–	।
।	ध़	सरी	मध	प	री	मप	धरीं	सं	।
।	रीं	संध	पसं	धप	म	री	१ स	ऽ–	:॥
							२ स–	–	॥
॥	ध़री	सम	रीप	मध	सं	धरीं	सं–	–	॥

‖ स	ऽ	ऽ –	री	म	री	म	ऽ –
ध	ऽ	ऽ –	प	म	री	स	ध़
री	ऽ	ऽ –	म	प	ऽ	ऽ –	–
री	ऽ	ऽ –	म	ध	ऽ	ऽ –	–
री	म	प	ऽ	प	पऽऽप	प –	–
री	म	ध	ऽ	ध	धऽऽध	ध –	–
धरीं	संध	म	पध	प	मरी	स	सस
ध़स	ऽस	ध़री	ऽरी	स	सऽऽस	स –	– :‖

वंशी **भारतम्** (देशकार) खेमटा-३६०

आरोहण - स री ग प ध सं **अवरोहण** - सं ध प ग री स

‖ॐ‖ सऽऽ , ऽऽऽ | गऽऽ , पऽऽ | धऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽग , पधऽ |

| सं ऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽ– , –पऽ | धऽप , गरीऽ | सऽऽ , ऽ–– ‖

‖ गऽप , धपऽ | धऽप , गरीऽ | गऽप , धपऽ | धऽऽ , ऽ–प |

| गऽप , धपऽ | धऽप , गरीऽ | पऽप , गरीऽ | सऽऽ , ऽ––ः‖

‖ सऽध , पधऽ | पऽग , पधऽ | धऽसं , धपऽ | धऽध , ध–– |

| सऽध , पधऽ | पऽग , पधऽ | पधप , गरीऽ | सऽऽ , ऽ––ः‖

‖ धऽध , पधऽ | सं ऽसं , धपऽ | गऽप , गरीऽ | सऽधृ , स–– |

| धऽध , पधऽ | सं ऽसं , धपऽ | गऽप , गरीऽ | सऽऽ , ऽ––ः‖

‖ धऽसं , रींसं ऽ | पऽध , गपऽ | सऽध , धधऽ | ––ध , धधऽ |

| धऽसं , रींसं ऽ | पऽध , गपऽ | धऽप , गरीऽ | सऽऽ , ऽ––ः‖

‖ सऽस , गपऽ | धऽऽ , ऽपधं | सँपधं , सँपधं | सँऽ– , ––– |

| गऽग , पधऽ | संऽऽ , ऽपधं | सँगँरीँ , सँगँरीँ | सँऽ– , ––– ‖

‖ गऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽप , गरीऽ | सऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽरी , सधृऽ |

| पृऽधृ , सधृऽ | सऽग , रीऽऽ | गऽप , धपऽ | गऽऽ , ऽ–– |

| पऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽग , धऽऽ | पऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽध , संऽऽ |

| संऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽनि , धऽऽ | संऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽध , गंऽऽ |

| संऽसं , संसंऽ | पऽध , गपऽ | धऽग , पधऽ | संऽऽ , ऽ–– |

| संऽसं , संसंऽ | पऽध , गपऽ | धऽऽ , पगरी | सऽऽ , ऽ––ः‖

वंशी — **वलचि** (कलावती) — केरवा-१२०

आरोहण - स ग प ध नि॒ सं **अवरोहण** - सं नि॒ ध प ग स

||ॐ|| संनि॒ धप | पग स | नि़॒ध़ नि़॒प़ | सऽसस स |

| सनि़॒ सग | पग पध | नि॒ऽधप धऽपग | ¹ पग स :||

| ² सं ऽ– ||

|| संसं संनि॒धऽ | नि॒नि॒ नि॒धपऽ | धध धपगऽ | पग स |

| सऽनि़॒स गऽसग | पऽगप धऽपध | नि॒धपऽ धपगऽ | पग स :||

|| संऽऽगं संनि॒ | संनि॒ ध | नि॒ऽऽसं नि॒ध | नि॒ध प |

| संनि॒ धप | संनि॒धप ग | ¹ गप धप | गपगऽ स :||

| ² गप धनि॒ | संऽसंसं सं– ||

वंशी **सुरभि (बागेश्री)** केरवा-१२०

आरोहण - स ग म ध नि सं **अवरोहण** - सं नि ध म प ध म ग री स

||ॐ|| संऽऽनि धम | गऽमग रीस | निस गम | ध मऽधनि |

| संऽऽनि धम | गऽमग रीस | निध निस | म ऽ– :||

|| स स | निसगम ध | म म | गमधनि सं |

| निऽऽनि धम | पध मग | रीऽरीम गरी | स ऽ– :||

|| रींऽऽसं निध | पधनिऽ धम | गमध– मधनिऽ | धनिरींऽ संऽधनि |

| रींऽऽसं निध | पधनिऽ धम | गम धनि | सं ऽ– :||

वंशी

हंसध्वनि

खेमटा-३६०

आरोहण - स री ग प नि सं **अवरोहण** - सं नि प ग री स

||ॐ|| संऽगं , रींऽसं | निऽप , गऽरी | पऽग , रीऽग | सऽ– , संऽ– ||

|| सऽग , पऽसं | निऽप , गऽरी | पऽग , रीऽस | रीऽरी , रीऽऽ |

| सऽग , पऽसं | निऽप , गऽरी | पऽग , रीऽग | सऽस , सऽ– :||

|| प़ऽनि़ , सऽग | रीऽरी , रीऽऽ | प़ऽनि़ , सऽग | पऽप , पऽऽ |

| संऽरीं , संनिप | गपग , रीऽऽ | रीऽऽ , गऽरी |१ सऽऽ , ऽऽ– :||

|२ सऽऽ , ऽऽस ||

|| गऽऽ , ऽऽरी | पऽऽ , ऽऽप | निऽऽ , ऽऽरीं | संऽऽ , ऽऽस |

| गऽऽ , ऽऽरी | पऽऽ , ऽऽप | निऽप , गऽरी | सऽऽ , ऽऽस :||

| सऽ– , संनिरीं ||

|| संऽऽ , निऽऽ | पऽऽ , गऽऽ | रीऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽप , गऽरी |

| सऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽनि़ , प़ऽनि़ | रीऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽनि़ , प़ऽनि़ |

| गऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽ– , प़ऽऽ | पऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽ– , निसंरीं |

| संऽगं , रींऽसं | निऽप , गऽरी | पऽग , रीऽग |१ सऽ– , संनिरीं :||

|२ सऽ– , संऽ– ||

वंशी — **हंसवाहिनी** (हंसध्वनि) — केरवा-१२०

आरोहण - स री ग प नि सं   **अवरोहण** - सं नि प ग री स

‖ॐ‖ प़ प़स । ऽस सस । ग रीस । ¹री रीरी :‖

। ²री ऽ– ‖

‖ सस गग । पप निसंरींऽ । संनि पग । री ऽ– :‖

‖ गग पप । निप गग । संसं पप । गग री :‖

‖ गप गंरीं । संनि पग । निप गस । ¹री ऽ– :‖

। ²ग ऽ– ‖

‖ संनिरींऽ संनि । पग रीरी । प गरी । स– स– :‖

‖ प पसं । निप संनि । प– संनि । प ऽ– :‖

‖ पप संनि । रीं– रींरीं । गंरीं गंरीं । सं– संसं :‖

‖ गप गंरीं । संनि पग । निप गस । ¹री ऽ– :‖

। ²ग ऽ– ‖

वंशी **हररंजनी** (शिवरंजनी) खेमटा- ३६०

आरोहण - स री ग॒ प ध सं **अवरोहण** - सं ध प ग॒ री स

‖ॐ‖ संऽध , पधप | ग॒ऽरी , सऽस | ग॒ऽग॒ , ग॒ऽग॒ | ग॒ऽप , धऽध |

| संऽध , पधप | ग॒ऽरी , सऽस | ग॒ऽग॒ , ग॒ऽरी |[1] सऽऽ , ऽऽ– :‖

|[2] सऽऽ , ऽऽस ‖

‖ धऽध , धऽध | धऽध , पधप | ग॒ऽऽ , रीऽऽ | सरीस , ध़ऽस |

| धऽध , धऽध | धऽध , पधप | ग॒ऽऽ , रीऽऽ |[1] सऽऽ , ऽऽस :‖

|[2] सऽऽ , ऽऽरी ‖

‖ ध़ऽध़ , सऽस | सरीग॒ , रीऽऽ | पऽप , पऽप | पऽऽ , ऽऽ– |

| ध़ऽध़ , सऽस | सरीग॒ , रीऽऽ | धऽध , धऽध | धऽऽ , ऽऽ– |

| सऽऽ , ग॒ऽऽ | पऽऽ , धऽऽ | संऽसं , संऽसं | संऽऽ , ऽऽ– |

| रींग॒ंरीं , संरींसं | धसंध , पधप | ग॒पग॒ , रीग॒री | सऽस , सऽरी |

| ध़ऽध़ , सऽस | सरीग॒ , रीऽऽ | पऽप , पऽप | पऽऽ , ऽऽ– |

| ध़ऽध़ , सऽस | सरीग॒ , रीऽऽ | धऽध , धऽध | धऽऽ , ऽऽसं |

| संऽऽ , ऽऽसं | संऽऽ , ऽऽसं | संऽसं , संऽसं | संसंसं , संऽ– |

| संऽध , पधप | ग॒ऽरी , सऽस | ग॒ऽऽ , रीऽऽ | सऽऽ , ऽऽ– ‖

वंशी   **शरावती** (मांड)   केरवा-१२०

आरोहण - स ग म प ध नि सं   **अवरोहण** - सं नि ध म प ध प म ग री स

||ॐ|| सं– सं– | सं– संरीं | निसं धनि | प गप :||

|| निध पनि | धप निध | पग पध |[1] प गप :||

|[2] प ऽ– ||

|| पसं निसं | पध मप | मग रीग | म ध̂– |

| पम गरी | स ध̂– | पम गरी | स ऽ– :||

|| प़प़ सस | सरी सस | पप गरी | सरी स– :||

|| प धप | ऽध प | सस गग | प ऽ– :||

|| पसं निसं | पध मप | मग रीग | म ध̂– |

| पम गरी | स ध̂– | पम गरी | स ऽ– :||

वंशी — **देशकार** — केरवा-१२०

आरोहण - स री ग प ध सं **अवरोहण** - सं ध प ग री स

||ॐ|| सग पसं | ध ऽऽपध | संध पग | प– ––पध |

| संध पऽगप | धप ग | पग रीऽगरी | स– – :||

|| स रीग | रीग ऽरी | स रीग | रीप ऽप |

| स रीग | रीध ऽप | ग रीऽऽग |¹ सप गरी :||

|² स– –स ||

|| पप पध | पग –स | पप पसं | धप –स |

| पप पध | पगं ऽरीं | संऽऽध पध |¹ सं– –स :||

|² सं– –सं ||

|| गंऽऽरीं गंरीं | गंरीं संध | रींऽऽसं रींसं | रींसं पध |

| सं– संध | संध पग | पसं धप | ध ऽध |

| गंरीं संऽधसं | रींसं ध– | संध पऽगप | धप सं– |

| संध पऽगप | धप ग– | पग रीऽगरी |¹ स– –सं :||

|² स– – ||

श्रीपाद (मांड)

आरोहण - स री ग प ध नि सं **अवरोहण** - सं नि ध म प ध प म ग री स

‖ॐ‖ धसधध	धध	धम	सम	धसधध	धध	ध	स–
संसंसं	संसं	संध	मध	संसंसं	संसं	सं	स– ‖
‖ पध	सं	निरीं	संनि	ध	पधपस	म	स
गम	प	पनि	ध	गम	पध	सं	सनि
पध	सं	निरीं	संनि	ध	पधपस	म	स
गम	प	पनि	ध	ग	सरी	१ स	स– :‖
						२ सनि	सरीं ‖
‖ सं	स	सध	सप	म	स	सनि	सरीं
सं	स	सध	सप	म	स	सग	रीस
रीरी	मम	पप	ध	निसं	निध	पनि	ध
पध	संरीं	गंसं	सरीं	१ सं	स	सनि	सरीं :‖
				२ सं	स	स–	– ‖

वंशी

कल्याणी (मेचकल्याणी)

खेमटा-३६०

आरोहण - स री ग म॒ प ध नि सं **अवरोहण** - सं नि ध प म॒ ग री स

‖ॐ‖ निऽऽ , संऽनि | धपम॒ , गऽऽ | रीऽऽ , नि॒ऽरी | सऽ– , ––– ‖

‖ नि॒ऽरी , गऽरी | म॒ऽरी , गऽरी | नि॒ऽरी , गऽरी | सऽऽ , नि॒ऽध॒ |

| नि॒ऽरी , गऽरी | म॒ऽरी , गऽरी | नि॒ऽरी , ध॒ऽनि॒ | सऽऽ , ऽऽ–ः‖

‖ पऽम॒ , धऽप | निऽध , पऽम॒ | रीगरी , सऽऽ | नि॒ऽरी , गऽऽ |

| पऽम॒ , धऽप | निऽध , पऽम॒ | रीगरी , नि॒ऽरी | सऽऽ , ऽऽ–ः‖

‖ निऽरीं , संऽनि | धनिसं , निऽध | पऽग , म॒ऽरी | गम॒ध , पऽऽ |

| संऽध , निऽप | धनिसं , निऽध | पऽम॒ , गऽरी |[१] सऽऽ , ऽऽ–ः‖

‖[२] सऽ– , –नि॒ | रीऽ– , ––स | गऽ– , ––री | सऽ– , सऽस |

| सऽ– , ––– ‖

वंशी

प्रसाद (भिन्नषड्ज)

केरवा-१२०

आरोहण - स ग म ध नि सं **अवरोहण** - सं नि ध म ग स

<table>
<tr><td>||ॐ||</td><td>संनि</td><td>धम</td><td>|</td><td>ग</td><td>ऽऽधनि</td><td>|</td><td>संध</td><td>निध</td><td>|</td><td>म</td><td>ऽऽधनि</td><td>|</td></tr>
<tr><td>|</td><td>संनि</td><td>धऽमध</td><td>|</td><td>निध</td><td>म</td><td>|</td><td>धम</td><td>गऽमग</td><td>|</td><td>स–</td><td>–</td><td>:||</td></tr>
<tr><td>||</td><td>स</td><td>ऽऽसस</td><td>|</td><td>सग</td><td>म</td><td>|</td><td>ग</td><td>ऽऽगग</td><td>|</td><td>गम</td><td>ध</td><td>|</td></tr>
<tr><td>|</td><td>म</td><td>ऽऽमध</td><td>|</td><td>मध</td><td>नि</td><td>|</td><td>सं</td><td>ऽऽसंसं</td><td>|</td><td>सं–</td><td>–</td><td>:||</td></tr>
<tr><td>||</td><td>संऽसंगं</td><td>संनि</td><td>|</td><td>निऽनिसं</td><td>निध</td><td>|</td><td>धऽधनि</td><td>धम</td><td>|</td><td>ग–</td><td>–</td><td>|</td></tr>
<tr><td>|</td><td>संनि</td><td>धऽमध</td><td>|</td><td>निध</td><td>म</td><td>|</td><td>धम</td><td>गऽमग</td><td>|</td><td>स–</td><td>–</td><td>:||</td></tr>
<tr><td>||</td><td>म</td><td>ऽऽमग</td><td>|</td><td>मग</td><td>म</td><td>|</td><td>मध</td><td>निसं</td><td>|</td><td>ऽनि</td><td>धम</td><td>|</td></tr>
<tr><td>|</td><td>ग</td><td>ऽ–</td><td>|</td><td>संनि</td><td>ऽध</td><td>|</td><td>निध</td><td>ऽम</td><td>|</td><td>धम</td><td>ऽग</td><td>|</td></tr>
<tr><td>|</td><td>मग</td><td>स–</td><td>|</td><td>गम</td><td>धनि</td><td>|</td><td>सं</td><td>गम</td><td>|</td><td>धनि</td><td>सं–</td><td>|</td></tr>
<tr><td>|</td><td>संनि</td><td>धम</td><td>|</td><td>निध</td><td>म–</td><td>|</td><td>मध</td><td>मग</td><td>|</td><td>स–</td><td>–</td><td>:||</td></tr>
</table>

वंशी | **शंकरा** | केरवा-१२०

आरोहण - स ग प नि ध सं   **अवरोहण** - सं नि प ग री स

॥ॐ॥	सऽसस	सस	गऽगग	गग	प	नि	सं–	–	॥
॥	सग	पनि	धसं	नि	प	गप	गऽऽरी	सनि़	|
|	सग	पनि	धसं	नि	प	निध	सं	ऽ–	:॥
॥	संऽऽसं	गंरीं	सं	निऽऽध	पऽऽप	गप	निऽऽध	प–	|
|	संऽऽसं	गंरीं	सं	निऽऽध	पऽऽप	गप	गऽऽरी	स–	:॥
॥	गं	रींसं	निध	सं	पनि	धसं	निप	ग	|
|	सं	निऽऽध	सं	ऽ–	संऽनिध	संऽनिध	संसं	नि	|
|	पनि	संगंऽरीं	संनिऽध	प	रीगऽरी	सस	गप	नि	|
|	पनि	संगंऽरीं	संनिऽध	प	१ गप	निध	सं	ऽ–	:॥
॥ २	गप	निध	सं	गप	निध	सं	गप	निध	॥

‖ सऽप़प़ प़प़ | गऽसस सस | प– गप | गस प़ |

| सऽप़प़ प़प़ | गऽसस सस | प– प़ | स ऽ– :‖

‖ ग ऽ | ऽऽगग गग | ग– ग | ऽप री– |

| गऽगरी सऽऽस | नि़ऽनि़ध़ प़ | स ऽ | ऽ ग |

| प ऽ | ऽऽपप पप | गपगप गपगप | निऽऽध सं |

| गंऽऽरीं सं | निऽऽध प | गऽगप गरी | स ऽ– :‖

वंशी | राजश्री (हंसध्वनि) | केरवा-१२०

आरोहण - स री ग प नि सं **अवरोहण** - सं नि प ग री स

‖ॐ‖	गऽऽप	संनि	रींसं	निप	गप	गऽरीस	री	ऽ
	गऽऽप	संनि	रींसं	निप	गऽपप	गरी	स	– :‖
‖	प़ऽऽप़	नि़स	गरी	ऽरी	प़नि़	सग	री	ऽ
	प़ऽऽप़	नि़स	गरी	–प	गनि	पऽगरी	स	– :‖
‖	पऽपप	गरी	सनि़	प़नि़	रीग	पऽगस	री	–
	पऽपप	गरी	सनि़	प़नि़	रीग	पऽगरी	स	– :‖
‖	सग	–री	गप	निप	गप	गऽरीस	री	ऽ
	सग	–प	निसं	निप	गऽपग	रीऽगरी	१ स	– :‖
							२ स	प़ ‖
‖	नि़	स	ग	सऽऽग	री	ऽ	ऽ–	प
	नि	प	ग	सऽऽग	री	ऽ	ऽ–	ग

| प नि | प संऽऽनि | रीं ऽ | – गं |

| रीं नि | पऽऽनि रींऽऽगं | सं ऽ | – रींरीं |

| गंऽऽरीं गंरीं | गंरीं निऽपनि | रींऽऽनि रींनि | रींनि पऽपनि |

| संनि पऽगप | निप गऽरीग | पग रीऽगरी |¹ स प़ :||

|² स – ||

वंशी **खमाज** खेमटा-३६०केरवा-१२०

आरोहण - स ग म प ध नि सं **अवरोहण** - सं नि॒ ध प म ग री स

‖ॐ‖ संSS , निSसं | नि॒Sध , पSम | गSम , पधनि | संS– , ––– ‖

‖ सSस , गSग | मSम , पSध | संSनि॒ , धSम | पSम , गSरी |

| सSस , गSग | मSम , पSध | पSम , गSम | गSS , SS– :‖

‖ संSनि , संSरीं | संSनि॒ , धपध | संSनि॒ , धSम | पSम , गSS |

| संSनि , संSरीं | संSनि॒ , धपध | नि॒धनि॒ , निसंनि | संSS , SS– :‖

‖ नि़Sस , गSम | पSध , निSसं | धनि॒ध , पधप | मपम , गSS |

| नि़Sस , गSम | पSध , मSप | गSS , रीSS | सSS , SS– :‖

‖ नि़स नि़॒ध़ | प़ध़ नि़ | स S | S– – |

| सग मप | गम ग | प S | S– – |

| पनि॒ धप | गम पध | नि S | S– – |

| निसं धनि॒ | पध नि | सं S | S– – |

|	नि̱	ऽध	|	प	ऽध	|	नि̱	ऽध	|	नि	सं	|
|	नि̱	ऽध	|	प	ऽध	|	नि̱	ऽध	|	नि	नि	‖
‖	सं	नि̱ध	|	पध	पम	|	पग	ऽम	|	प	पध	|
|	सं	नि̱ध	|	पध	पम	|	पग	ऽरी	|	स–	–	:‖

वंशी

कैरलि (रेवति)

केरवा-१२०

आरोहण - स री॒ म प नि॒ सं **अवरोहण** - सं नि॒ प म री॒ स

॥ॐ॥	सं	नि॒प	।	म	री॒	।	नि़॒नि़॒	री॒री॒	।	स	स	।	
।	स	री॒	।	म	नि॒	।	पप	रीं॒रीं॒	।	सं	सं–	:॥	
॥	नि॒	संरीं॒	।	सं	संसं	।	नि॒	संनि॒	।	प	प	।	
।	सं	नि॒प	।	म	री॒स	।	नि़॒	री॒	।	स	S–	:॥	
॥	नि़॒	सरी॒	।	स	प़प़	।	सरी॒	री॒–	।	री॒री॒	री॒–	।	
।	म	पनि॒	।	सं	संसं	।	प	रीं॒	।	सं	Sसं	:॥	
॥	सं	रीं॒सं	।	नि॒	संनि॒	।	प	नि॒प	।	मप	म	।	
।	स	री॒म	।	प	नि॒प	।	म	पप	।	सं	S–	:॥	

वंशी **हरिकांबोजी** (खमाज) केरवा-१२०

आरोहण - स ग म प ध नि सं **अवरोहण** - सं नि॒ ध प म ग री स

‖ॐ‖	स	गम	|	प	नि॒ध	|	पऽपप	पध	|	मप	ग	|
|	स	गम	|	प	मप	|	ग	री	|	स	ऽ–	:‖
‖	गऽगग	गप	|	मध	मप	|	ग–	–प	|	मग	रीस	|
|	गऽगग	गप	|	मध	मप	|	ग–	–री	|	स	ऽ–	:‖
‖	गप	ऽनि॒	|	धम	ऽप	|	मध	ऽनि	|	संऽसंसं	सं	|
|	गप	ऽनि॒	|	धम	ऽप	|	मग	ऽरी	|	स–	–	:‖
‖	सग	ऽरी	|	सध़	ऽनि़॒	|	ध़स	ऽनि़	|	स	ऽ–	|
|	सग	ऽम	|	पनि॒	ऽध	|	पम	ऽप	|	ग	ऽ–	|
|	मप	ऽध	|	नि॒ध	ऽप	|	मध	ऽनि	|	सं	ऽ–	|
|१	संगं	ऽरीं	|	संध	ऽनि॒	|	पध	मप	|	मग	ऽरी	:‖
‖२	निसं	धनि॒	|	पध	मप	|	मग	ऽरी	|	स–	–	‖

वंशी **बदरी** (केदार) खेमटा-३६०, केरवा-१२०

आरोहण - स री स म प ध प नि ध सं **अवरोहण** - सं नि ध प म॒ प ध नि॒ ध प म री स

॥ॐ॥ मSम , सSस | मसम , धमध | संS– , सSS | मS– , ––– ॥

॥ सरीस , मSप | धनि॒ध , पम॒प | म॒Sम॒ , पधप | मSरी , सS– |

| सरीस , मSप | धनि॒ध , पम॒प | म॒Sम॒ , पधप | मS– , –––:॥

॥ पSप , संSसं | निSरीं , संSS | म॒Sप , धनि॒ध़ | पधप , मS– |

| पSप , संSसं | निSरीं , संSS | म॒SS , मSरी | सSS , SS–:॥

॥ संरींनि , संSसं | मंSS , मंSS | मंSमंमं मंमं | मं– – ॥

॥ धSधनि॒ धप | म॒प धनि॒ | धSधध धनि | संSसंसं संनि |

| धSधनि॒ धप | म॒प, धप | मSमम मरी | [१] सSसरी मप :॥

| [२] सस रीस ॥

‖ मम	मऽमम	म–	–	–	–	–स	रीस
पप	ऽप	प–	–	–	–	–प	म॒प
ध	रीं	सं	ऽनि॒	धनि॒	धप	ऽध	म॒प
मऽमम	म–	–ग	मरी	सऽसस	स–	–स	रीस
मम	मममऽ	म–	–	–	–	–स	रीस
प–	प–	प–	–	–	–	प–	म॒प
ध	रीं	सं	ऽध	पम॒	ऽप	–ग	मप
म	री	स	री	१ स	ऽ	ऽस	रीस :‖
				‖ २ स	ऽ	ऽ–	– ‖

वंशी

केकावली (देश)

केरवा-१२०

आरोहण - स रि म प नि सं **अवरोहण** - सं नि॒ ध प म ग रि ग स

‖ॐ‖	रि	मम	| प	निनि	| सं	नि॒ध	| पध	मग |
|	रि	मम	| प	मग	| रि	रीरि	| स	स – :‖
‖	नि॒	धध	| पध	मरी	| मप	रीं	| सं	संरीं |
|	नि॒	धध	| पध	मग	| रि	गनि॒	| स	स – :‖
‖	सं	नि॒	| ध	प	| ध	म	| स ग	रि |
|	स ग	नि॒	| स	स स	| सरी	रीम	| मप	पनि |
|	निसं	रींसं	| रीं	स प	| ध	मग	| रि	स प |
|	म	गरी	| स ग	नि॒	| स	स	| स –	– :‖
‖	नि॒	नि॒स	| रीम	प	| नि॒ध	मप	| नि	सं |
|	रीं	गं॒रीं	| सं	नि	| सं	सं स स सं	| सं –	– ‖

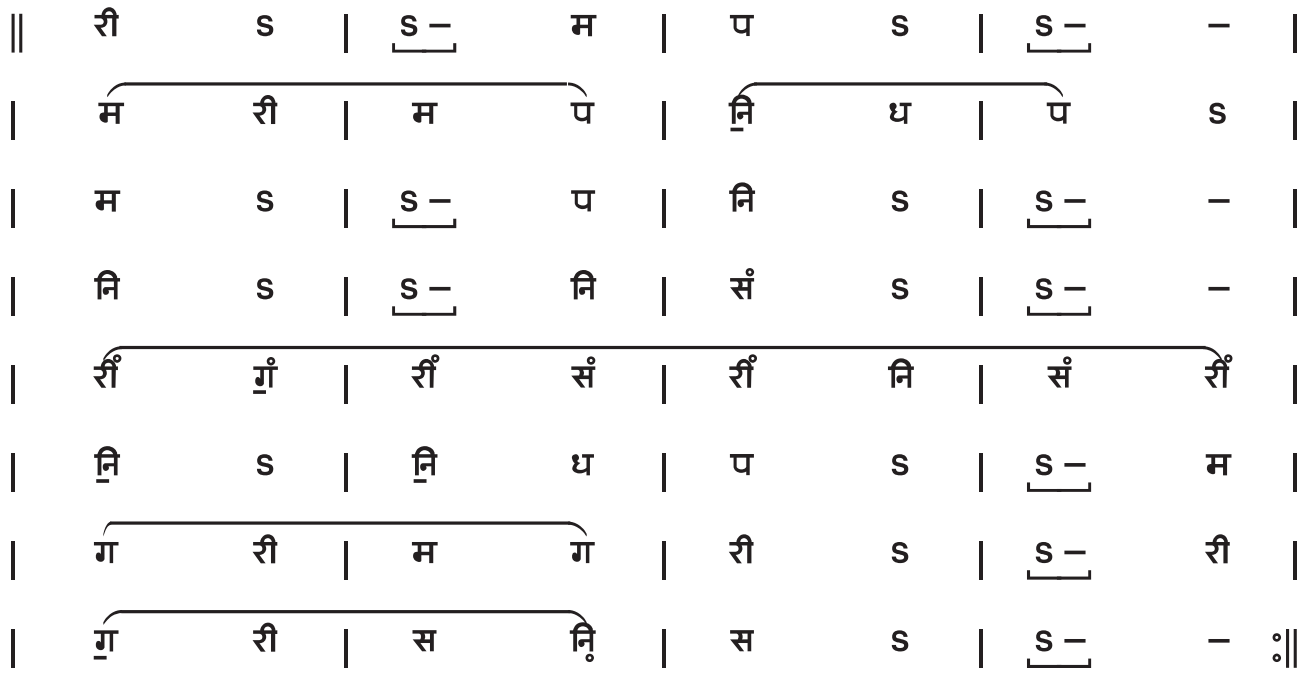

‖ री ऽ | ऽ – म | प ऽ | ऽ – – |

| म री | म प | नि̲ ध | प ऽ |

| म ऽ | ऽ – प | नि ऽ | ऽ – – |

| नि ऽ | ऽ – नि | सं ऽ | ऽ – – |

| रीं गं̲ | रीं सं | रीं नि | सं रीं |

| नि̲ ऽ | नि̲ ध | प ऽ | ऽ – म |

| ग री | म ग | री ऽ | ऽ – री |

| ग̲ री | स नि़ | स ऽ | ऽ – – :‖

वंशी   **गौडमल्हार**   खेमटा-३६० केरवा-१२०

आरोहण - स री ग म री प ध नि ध सं **अवरोहण** - सं ध नि॒ प म ग म री स

||ॐ|| निसंध , नि॒ऽप | गऽप , मऽऽ | गऽऽ , मऽरी | सऽऽ , ऽऽ– ||

|| सऽरी , गऽम | रीगरी , मऽऽ | रीमरी , पऽप | नि॒धनि॒ , पऽऽ |

| सऽरी , गऽम | रीगरी , मऽऽ | पऽम , गऽरी | सऽऽ , ऽऽ– :||

|| मऽप , मगरी | सरीग , मऽऽ | पऽध , नि॒ऽप | मऽऽ , गऽऽ |

| मऽप , मगरी | सरीग , मऽऽ | पऽध , नि॒ऽप | मऽऽ , ऽऽ– :||

|| – – | – – | नि़स गरी | म ऽऽपध |

| नि॒ ऽऽपध | नि ऽनि | सं सं | सं – ||

|| सम रीप | ऽप नि॒ध | निसं धप | गप म |

| सम रीप | ऽप म | ग रीऽगरी | स ऽ– :||

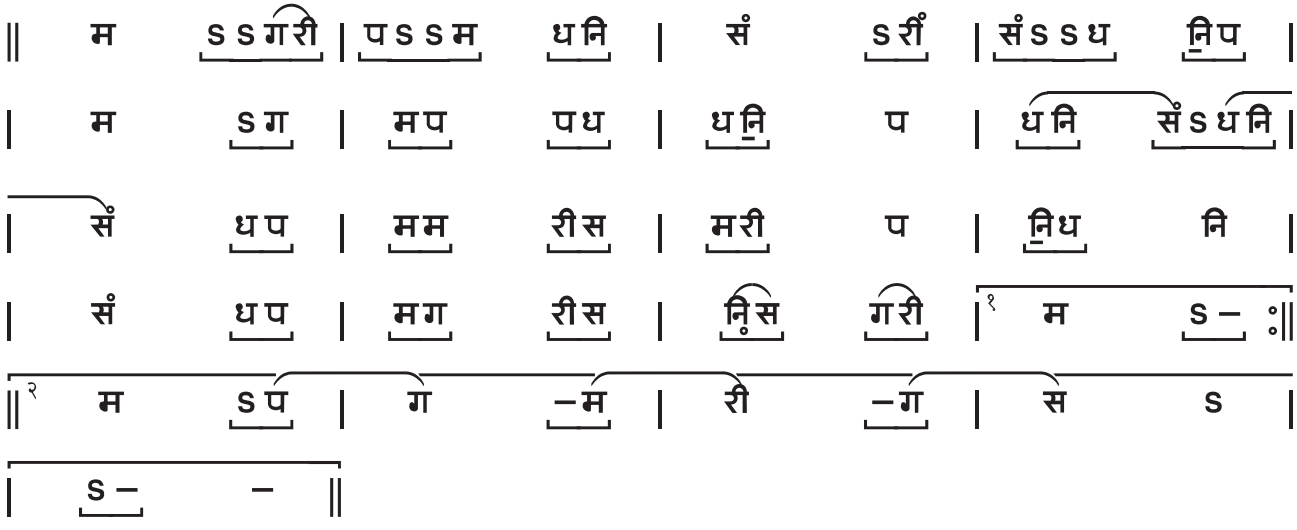

|| म ऽऽगरी | पऽऽम धनि | सं ऽरीं | संऽऽध नि॒प |

| म ऽग | मप पध | धनि॒ प | धनि संऽधनि |

| सं धप | मम रीस | मरी प | नि॒ध नि |

| सं धप | मग रीस | नि़स गरी |¹ म ऽ– :||

||² म ऽप | ग –म | री –ग | स ऽ |

| ऽ– – ||

वंशी

रामरंजनी (कलावती)

खेमटा-३६०

आरोहण - स ग प ध नि॒ सं **अवरोहण** - सं नि॒ ध प ग स

||ॐ|| प ग स , ऩि॒ ध़ स | ग ऽ ऽ , ऽ ऽ ध | नि॒ ऽ ऽ , ऽ ऽ नि॒ | सं ऽ – , – – – ||

|| सं ऽ सं , नि॒ ऽ नि॒ | ध नि॒ ध , प ऽ प | ग प ग , स ऽ ऩि॒ | प़ ऽ ध़ , स ऽ ग |

| सं ऽ सं , नि॒ ऽ नि॒ | ध नि॒ ध , प ऽ प | ग प ग , ऩि॒ प़ ऩि॒ | स ऽ – , – – – :||

|| ऩि॒ ऽ प़ , स ऽ – | स ऽ ग , प ऽ – | ग ऽ प , नि॒ ऽ ध | नि॒ ऽ ध , प ऽ – |

| ऩि॒ ऽ प़ , स ऽ – | स ऽ ग , प ऽ – | नि॒ ऽ ध , प ऽ ग |[१] प ऽ – , – – – :||

|[२] प ऽ – , ग ऽ प ||

|| ध̂ – – , – – प̂ | ध̂ – – , – – प̂ | ध – – , नि॒ ऽ ऽ | नि॒ ऽ ऽ , नि॒ ऽ ऽ |

| ध̂ ऽ – , ध ऽ – | प̂ ऽ – , प ऽ – | ग̂ ऽ – , ग ऽ – | स̂ – – , ग ऽ प |

| ध̂ – – , – – प̂ | ध̂ – – , – – प̂ | ध – – , नि॒ ऽ ऽ | नि॒ ऽ ऽ , ध ऽ नि॒ |

| सं ऽ गं , सं ऽ नि॒ | ध ऽ नि॒ , प ऽ नि॒ | प ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ | स̂ – – , – – – :||

‖ ग ऽ प , नि॒ ऽ ध | प ऽ ग , स ऽ ध़ | प़ ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ | स ऽ ऽ , ऽ – स |

| ग ऽ ऽ , ऽ – स | प ऽ ऽ , ऽ – स | ध ऽ ऽ , ऽ – सं | नि॒ ऽ ऽ , ऽ – गं |

| सं ऽ ऽ , ऽ – नि॒ | ध ऽ ऽ , ऽ – प | ग ऽ ऽ , ऽ ऽ ध़ | स ऽ ऽ , ऽ – स |

| ग ऽ ऽ , ऽ – स | प ऽ ऽ , ऽ – प | ध ऽ ऽ , ध ऽ नि॒ | सं ऽ ऽ , ऽ – – :‖

‖ॐ‖ धध निध | संसं संसं | धध निध | संसं संसं |

| सं रींनि | sनि धप | ग रीस | री सस |

| सस रीरी | गग पप | धध निध | संसं संसं :‖

‖ प पध | प गग | प प– | धध नि |

| प ध | नि सरीं | नि धनि | धध प :‖

‖ सं संरीं | नि पध | पध निसं | नि धध |

| संसं sनि | sनि धप | ग ध | प पप :‖

‖ सस रीरी | गग पप | धध निध | संसं संसं |

| सं रींनि | sनि धप | ग रीस | री सस :‖

‖ सस रीरी | गग पप | संसं संसं | सं s– ‖

वंशी — **धानी** — खेमटा-३६०

आरोहण - स ग॒ म प नि॒ सं **अवरोहण** - सं नि॒ प म ग॒ स

॥ॐ॥ ग॒ऽम , पऽनि॒ | पऽनि॒ , संऽरीं | संऽ– , संऽ– | संऽ– , ––– ॥

॥ पऽऽ , पऽप | पनि॒प , मग॒म | ग॒ऽरी , सऽनि़॒ | सऽ– , ग॒ऽम |

| पऽऽ , पऽप | पनि॒प , मग॒म | ग॒ऽऽ , रीऽऽ | सऽऽ , ऽऽ– :॥

॥ ग॒ऽम , पऽनि॒ | संऽसं , संऽ– | ग॒ंऽरीं , रींऽसं | संनि॒रीं , संऽ– |

| ग॒ऽम , पऽनि॒ | संऽनि॒ , पऽ– | पऽम , मऽग॒ | ग॒ऽरी , सऽ– :॥

॥ संऽनि॒ , नि॒ऽप | पऽम , मऽग॒ | ग॒ऽऽ , रीऽऽ | सऽऽ , ऽऽ– ॥

॥ ग॒ऽम , पऽम | ग॒ऽरी , सऽ– | नि़॒ऽप़ , नि़॒ऽरी | सऽ– , सऽ– |

| नि़॒ऽस , ग॒ऽम | पऽसं , नि॒ऽ– | सं–सं , नि॒–नि॒ | प–प , म–म |

| ग॒ऽम , पऽम | ग॒ऽरी , सऽ– | नि़॒ऽप़ , नि़॒ऽरी | सऽ– , संऽ– |

| ग॒ंऽरीं , संऽनि॒ | पऽनि॒ , पऽम | ग॒ऽऽ , रीऽऽ | सऽऽ , ऽऽ– :॥

वंशी **विजया** (आसावरी) केरवा-१२०

आरोहण - स री म प ध॒ नि॒ सं **अवरोहण** - सं नि॒ ध॒ प म ग॒ री स

‖ॐ‖	मऽपध॒	संसं	|	नि॒ध॒	पम	|	पध॒मप	ग॒री	|	स–	–	‖
‖	सं	ऽनि॒	|	ध॒	प	|	मऽमप	ध॒प	|	ग॒	री	|
|	सऽसरी	ग॒री	|	सरी	मप	|	मऽमप	ध॒प	|	मप	ध॒ध॒	|
|	सं	ऽनि॒	|	ध॒	प	|	मऽमप	ध॒प	|	ग॒	री	|
|	सऽसरी	ग॒री	|	सरी	मप	|	ग॒	री	|	स	ऽ–	:‖
‖	रीऽमप	ध॒प	|	मपऽम	ध॒प	|	ध॒म	पग॒	|	रीरी	–	|
|	सऽसरी	ग॒री	|	सरीऽस	ग॒री	|	सऽसरी	मऽरीम	|	प	ऽ–	|
|	रीऽमप	ध॒प	|	मपऽम	ध॒प	|	ध॒म	पग॒	|	रीरी	–	|
|	सऽसरी	ग॒री	|	सरीऽस	ग॒री	|	स	नि़॒ध़॒	|	स–	–	:‖
‖	–सं	ऽनि॒	|	ध॒	प	|	––मप	ध॒प	|	ग॒	री	|
|	––सरी	ग॒री	|	सरी	मप	|	––मप	ध॒प	|	मप	ध॒ध॒	|

–सं	ऽनि॒	ध॒	प	––मप	ध॒प	ग॒	री
––सरी	ग॒री	सरी	मप	ग॒	री	स	ऽ– :‖
‖ संसंऽसं	संसं	संनि॒ऽनि॒	नि॒ध॒	ध॒संऽसं	संऽग॒ंरीं	सं–	–सं
ग॒ंग॒ं	–सं	रींरीं	–ध॒	सं–	सं–	सं–	– ‖
‖ प	ऽध॒	सं	सं	रींरीं	–	संनि॒	ध॒प
म	ऽप	ध॒	प	ग॒ग॒	–	री	स
ध़॒	ऽस	री	म	पप	–	रीम	पनि॒
ध़॒	ऽम	प	ध॒	संसं	–	संरींग॒ंरीं	सं
ध॒ग॒ं	रींग॒ं	संरीं	नि॒सं	पनि॒	ध॒प	मप	ग॒री
सरी	मप	ग॒	री	सस	–ध़॒	स–	– :‖

वंशी **गणेश** (सारंग) **खेमटा-३६०**

आरोहण - स री म प नि सं **अवरोहण** - सं नि̲ प म री स

॥ॐ॥ पऽप , पऽप | पऽऽ , नि̲पम | रीऽऽ , रीमरी | सऽ– , सऽ– ॥

॥ रीऽम , रीऽस | रीऽम , पनि̲प | निऽसं , रींऽसं | नि̲ऽऽ , मऽप |

| रीऽम , रीऽस | रीऽम , पनि̲प | रीऽम , रीऽनि̣ | सऽऽ , ऽऽ– :॥

॥ पसंनि , संऽसं | मनि̲प , नि̲ऽनि̲ | रीपम , पऽप | निऽनि , संऽ– |

| पसंनि , संऽसं | मनि̲प , नि̲ऽनि̲ | रीमप , नि̲पम | रीमरी , सऽ– :॥

॥ रीऽम , रीऽस | रीऽम , पनि̲प | निऽसं , रींऽसं | नि̲ऽऽ , मऽप |

| रीऽम , रीऽस | रीऽम , पनि̲प | रीऽम , रीऽनि̣ | सऽऽ , ऽऽ– :॥

॥ संनिरीं , संऽ– | पनि̲प , मपऽ | मरीप , मनि̲प | संनिरीं , संऽसं |

| संनिरीं , संऽ– | पनि̲प , मपऽ | रीऽम , पऽम | रीऽऽ , सऽ– :॥

॥ संऽसं , संऽनि | पऽप , पऽम | रीऽरी , मऽरी | सऽनि̣ , सऽरी |

| रीऽम , मऽप | पऽनि , संऽरीं | संऽ– , संऽ– | सऽनि̣ , सऽरी ॥

॥ मऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽनि , संऽनि̲ | पऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽरी , मऽरी |

| पऽऽ , ऽऽऽ | रीऽम , पऽनि | संऽ– , संऽ– | ––नि , संऽनि |

| रींऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽनि , संऽरीं | संऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽरीं , संऽनि |

| पऽसं , निऽप | मऽ– , पऽम | रीऽप , मऽरी | सऽ– , नि़नि़नि़ |

| नि़ऽऽ , ऽपम | नि़ऽऽ , ऽपम | नि़पम , नि़पम | नि़ऽ– , पपप |

| पऽऽ , ऽमरी | पऽऽ , ऽमरी | पमरी , पमरी | पऽ– , मपनि |

| संऽऽ , ऽऽनि | सेंऽऽ , ऽऽनि | सेंऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽ– , पनिसें |

| रींऽऽ , ऽऽसं | रींऽऽ , ऽऽसं | रींऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽ– , नि़सरी |

| मऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽनि , संऽनि़ | पऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽरी , मऽरी |

| पऽऽ , ऽऽऽ | रीऽम , पऽनि | संऽ– , संऽ– | ––नि , संऽनि |

| रींऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽनि , संऽरीं | संऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽरीं , संऽनि |

| पऽसं , नि़ऽप | मऽ– , पऽम | रीऽप , मऽरी | सऽ– , नि़नि़नि़ |

| नि़ऽपृ , नि़नि़नि़ | सऽरी , नि़नि़नि़ | नि़ऽपृ , नि़ऽऽ | सऽ– , नि़नि़नि़ |

| नि़ऽपृ , नि़नि़नि़ | सऽरी , नि़नि़नि़ | नि़ऽपृ , सऽऽ | ––नि़ , सऽरी |

| मऽस , रीऽम | पऽ– , मऽप | नि़ऽम , पऽनि | सेंऽ– , रींरींरीं |

| संऽऽ , नि़ऽऽ | पऽऽ , मऽऽ | रीऽऽ , मऽरी | सऽ– , ––– ‖

वंशी

पारिजातम्

केरवा-१२०

||ॐ|| सं निध | प– ध– | पSमप मरी | स– स– |

| संनिसंS रींसं | Sसं निध | सं S | S– – ||

|| स रीस | ग Sप | धप गध | प Sप |

| धपधS मग | मगमS री | स S | S– – :||

|| संरीं सं | निध प | धसं निध | पम ग |

| मरी ग | पध निध | संनिसंS Sरीं |१ सं– – :||

|२ सं– –प ||

|| ध– मग | मगमS Sरी | स– ग– | प– ध– |

| गप धसं | निध प | संनिसंS निधनिS | धपधS मगमS |

| ध– मग | मगमS Sरी | स– ग– | प– ध– |

|१ संनि धनि | धप धप | मगमS री | स– –प :||

||२ संनिसंS रींसं | Sसं निध | सं S | S– – ||

|| रींसं निध | पे– धे– | निध पम | गे– पे– |

| मरी गप | धे– पे– | नि– धे– | सं– – ||

|| ग ऽप | मगमऽ ऽरी | स नि़ | ध़ प़ |

| सऽसस सस | रीऽरीरी रीरी | ग गऽऽग | ग– – |

| प ऽध | संनिसंऽ ऽनि | ध प | म ऽ– |

| रीऽरीरी गऽगग | पऽपप धऽधध | संनिसंऽ रींऽऽरीं | गं– –ध |

| संऽसंसं संऽसंसं | संनि निध | धपधऽ पध | सं ऽ– |

| रींऽरींरीं रींऽरींरीं | रींसं रींगं | ग पनि | ध ऽ– |

| संनि निध | धप पम | मग मऽऽरी | ग– –प

| धप पम | मग मरी | स सऽऽस |१ स– –री :||

|२ स– – ||

गुणवंत (पिलू)

आरोहण - स ग॒ म प नि सं **अवरोहण** - सं नि॒ ध॒ प ध॒ प म ग॒ म प ग॒ नि॒ स

‖ॐ‖	प॒ध॒	पम	ग॒री	सनि॒	स	ग	म	प
	ध॒	पम	ग॒री	सनि॒	स	स	स	प॒ध॒ ‖
‖	नि॒	स	स	प॒ध॒	स	स	स	नि॒ध॒
	प॒	स	स	म॒ध॒	प॒	स	स	प॒ध॒
	नि॒	नि॒	नि॒	प॒	स	स	स	गम
	प॒ध॒	पम	ग॒री	सनि॒	स	स	[1] स	प॒ध॒ :‖
							[2] स	– ‖
‖	ग॒	सरी	स	सनि॒	स	स	–	–
	स	सग	म	सध॒	प	प	–	–
	प	सम	ग	सम	प	सम	ग	सम
	प॒ध॒	पम	गम	प॒ध॒	प	प	–	–

प	निध॒	प	ध॒	प	मग	म	प
प	ग॒री	स	नि़	स	नि़ध़॒	प़	प
पध॒	मप	गम	ग॒री	स	ग	म	प
म	ग	ग॒	री	स	ऽ	ऽ	— :‖

वंशी — **कालगति** (कलावती) — खेमटा-३६०

आरोहण - स ग प ध नि॒ सं   **अवरोहण** - सं नि॒ ध प ग स

‖ॐ‖ प ऽ ध , सं ऽ ऽ | नि॒ ऽ ध , प ऽ ऽ | ग ऽ ऽ , प ऽ ग | स ऽ ऽ , ऽ – – ‖

‖ नि़॒ ऽ ऽ , ध़ ऽ ऽ | स ऽ ऽ , ग ऽ ऽ | प ऽ ऽ , ध ऽ नि॒ | ध – – , प ग स |

| नि़॒ ऽ ऽ , ध़ ऽ ऽ | स ऽ ऽ , ग ऽ ऽ | प ध प , ग प ग | स ऽ ऽ , ऽ – – :‖

‖ प ऽ ध , नि॒ ऽ ऽ | ध ऽ ऽ , सं ऽ ऽ | नि॒ ऽ ध , प ऽ ऽ | ध ऽ प , ग ऽ ऽ |

| प ऽ ध , नि॒ ऽ ऽ | ध ऽ ऽ , प ऽ ऽ | ग ऽ ऽ , प ऽ ग |[१] स ऽ ऽ , ऽ – – :‖

|[२] स – – , प ध सं ‖

‖ गं ऽ – , गं ऽ – | गं ऽ सं , नि॒ ऽ ध | सं ऽ – , सं ऽ – | सं ऽ – , ग प ध |

| नि॒ ऽ ध , ध ऽ प | प ऽ ग , स ऽ नि़॒ | नि़॒ ऽ ऽ , ध़ ऽ ऽ | स ऽ ऽ , ऽ – – ‖

‖ ग ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ – , प ऽ ऽ | ग ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ – , स ऽ ऽ |

| नि़॒ ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ – , ध़ ऽ ऽ | स ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ – , ग ऽ ऽ |

| प ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ – , ध ऽ ऽ | नि॒ ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ – , ध ऽ ऽ |

| प ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ – , ध ऽ ऽ | सं ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ – , स ऽ ऽ |

| गं ऽ ऽ , सं ऽ ऽ | नि॒ ऽ नि॒ , ध ऽ ऽ | प ऽ ऽ , ग ऽ ऽ | स ऽ स , नि़॒ ऽ ऽ |

| ध़ ऽ ऽ , स ऽ ऽ | ग ऽ ऽ , प ऽ ऽ | स ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ |१ ऽ ऽ – , स ग प़ :‖

|२ ऽ ऽ ऽ , – – – ‖

वंशी　　विष्णुपदी　　खेमटा-३६० केरवा-१२०

॥ॐ॥

| − − − , री ऽ म ॥

॥ प ऽ म , प ऽ म | री ऽ स , नि़ ऽ री | सं ऽ ऽ , सं ऽ ऽ | सं ऽ − , − − − ॥

॥ प ऽ म॒ , प नि प | म॒ ऽ म , री ऽ म | प ऽ नि , प ऽ म॒ | म ऽ री , री ऽ म |

| प ऽ म , प ऽ म | री ऽ स , नि़ ऽ री | सं ऽ ऽ , सं ऽ ऽ | सं ऽ ऽ , म प म |

| नि़ ऽ स , री म री | म॒ ऽ म , री ऽ म | प ऽ नि , प ऽ म | प ऽ म , री ऽ म |

| प ऽ म , प ऽ म | री ऽ स , नि़ ऽ री | सं ऽ ऽ , सं ऽ ऽ | सं ऽ − , − − − :॥

॥ प ऽ म॒ , म री म | प ऽ प , प ऽ म | प ऽ नि॒ , प ऽ म | प ऽ प , प ऽ − |

| प म॒ प , नि सं नि | रीं ऽ रीं , रीं ऽ − | सं नि॒ प , म॒ प म | री ऽ री , री ऽ − |

| म ऽ म , म ऽ री | स ऽ स , स ऽ री | म ऽ प , नि॒ ऽ प | नि॒ ऽ प , म ऽ री |

| प ऽ म , प ऽ म | री ऽ स , नि़ ऽ री | सं ऽ ऽ , सं ऽ ऽ | सं ऽ − , नि सं रीं :॥

‖ रींरींरीं , रींऽऽ | संसंसं , संऽऽ | पऽम , पऽनि | पऽ– , ––म |

| रीरीरी , रीऽऽ | ससस , सऽऽ | नि़ऽप़ , नि़ऽरी | सऽ– , रीऽऽ |

| ममम , मऽऽ | म॒म॒म॒ , म॒ऽऽ | पपप , पऽम | पऽऽ , रीऽम |

| पऽम , पऽम | रीऽस , नि़ऽरी | स̂ऽऽ , स̂ऽऽ | स̂ऽ– , –रीरी :‖

‖ रींऽरींरीं रीं | संऽसंसं सं | नि॒ऽनि॒नि॒ पम॒ | प ––रीम |

| पऽपप प | ऽऽपप प | ऽऽपप नि॒प | म॒प म– |

| सरीस– रीमरी– | मपम॒– निसंनि– | प म॒ | री म |

| पऽम , पऽम | रीऽस , नि़ऽरी | स̂ऽऽ , स̂ऽऽ | स̂ऽ– , ––– :‖

‖ सऽम , रीऽ– | मऽप , मऽ– | पऽनि , संऽ– | संऽनि॒ , संऽ– |

| रींऽमं , रींऽ– | संऽनि॒ , पऽ– | मऽरी , सऽ– | नि़ऽरी , सऽ– |

| संऽऽ , निऽऽ | नि॒ऽऽ , पऽऽ | म॒ऽऽ , मऽऽ | रीऽऽ , मऽऽ |

| पऽम , पऽम | रीऽस , नि़ऽरी | स̂ऽऽ , स̂ऽऽ | स̂ऽ– , ––– :‖

वंशी भीमपलास केरवा-१२०

आरोहण - स ग म प नि सं **अवरोहण** - सं नि ध प म ग री स

‖ॐ‖ सं निध | पमपऽ गऽऽम | सम गरी | स ऽ– ‖

‖ नि सस | ग म | प नि | सं संसं |

| निसं निध | पम गरी | स नि | स ऽ– :‖

‖ रीस निस | म ऽ– | मप गम | प ऽ– |

| ध मप | ग ऽ– | म गरी | स ऽ– :‖

‖ संऽसंसं संसं | संमं गंरीं | सं नि | ध प |

| मऽमम मम | मग मप | मऽपम गरी | स– निस ‖

‖ म ऽ | ऽ– गप | म ऽ | ऽ– गरी |

| स ऽ | ऽ– पनि | स ऽ | ऽ– निस |

| म ऽ | ऽ– गप | म ऽ | ऽ– सं |

| निनि धध | पप मम | गम गरी | स ऽ– |

नि़ऽनि़स	गम	पम	गरी	सऽसग	मप	म	पम
निऽनिध	पम	पनि	सँरीँ	सँ	सँऽऽसँ	सँ–	–
––गँरीँ	सँनि	सँ	सँ	––सँनि	धप	म	म
––पनि	धप	म	गरी	स	ऽ	१ ऽ–	नि़स :॥
						२ ऽ–	– ॥

वन्देमातरम् (मिश्रकाफी)

आरोहण - स रि ग॒ म प ध नि॒ सं **अवरोहण** - सं नि॒ ध प म ग॒ रि स

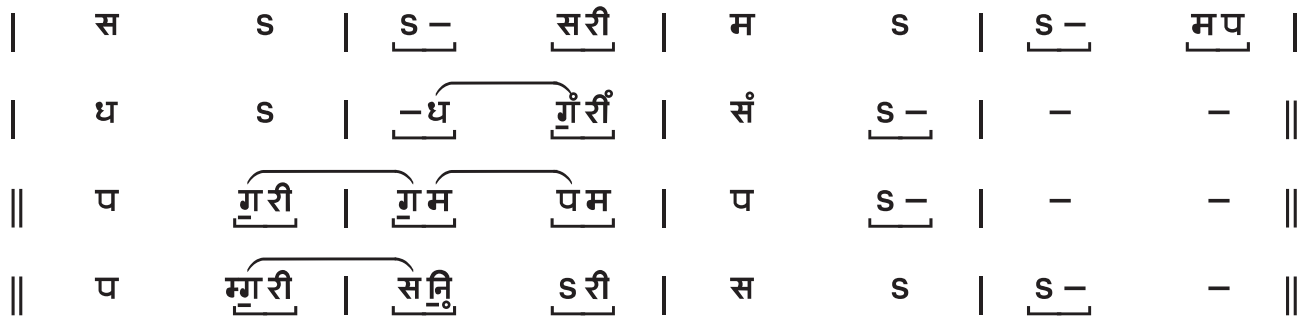

| स ऽ | ऽ– सरी | म ऽ | ऽ– मप |

| ध ऽ | –ध ग॒ंरीं | सं ऽ– | – – ||

|| प ग॒री | ग॒म पम | प ऽ– | – – ||

|| प मग॒री | सनि॒ ऽरी | स ऽ | ऽ– – ||

वंशी | **माधवनित्या** | केरवा-१२०

‖ॐ‖	निऽऽध	पऽऽम	ग	ऽस	री	ऽऽगरी	स–	–	‖
‖	सं–	निऽऽध	प	पधनिनि	सं	निऽऽध	प	ऽ–	|
|	सं–	निऽऽध	प	पधनिनि	सं	निऽऽध	प	रीमपध	|
|	धं̂–	पऽऽम	री	गऽऽरी	स	ऽ	ऽ–	–	:‖
‖	सऽऽरी	गम	प	ऽ	धप	मध	प	ऽ–	|
|	गऽऽम	पऽऽध	नि	ऽ	गम	पध	सं	ऽ	|
|	संनि	नि̱	ध	ऽ–	पग	धप	प	ऽ–	|
|	धं̂–	पऽऽम	री	गऽऽरी	स	ऽ	ऽ–	–	:‖
‖	स	रीस	री	ऽ	मग	मप	प	ऽ	|
|	गम	प	नि	ऽ	पध	धप	सं	ऽ	|
|	संरींसंऽ	नि	ध	ऽ	गम	पध	प	ऽ	|
|	धं̂–	पऽऽम	री	गऽऽरी	स	ऽ	ऽ–	–	:‖

‖ सरी	स	ऩि	ऽ–	प़ध़	प़	स	ऽ |
| सरी	स	ग	ऽ–	गम	ग	प	ऽ |
| गम	प	नि	ऽ	सं	ऽऽधनि	सं	ऽ |
| संनि	ऽनि̱	ध	ऽ	निध	पम	ग	ऽ |
| ध̂–	पऽऽम	री	गऽऽरी	स	ऽ	ऽ–	रीमपध |
| ध̂–	पऽऽम	री	गऽऽरी	स	ऽ	ऽ–	– :‖
‖ सं–	–प	सं–	–प	सं	ऽ	ऽ–	– ‖

वंशी **जननी** (बहार) **केरवा-१२०**

‖ॐ‖ सं नि॒प | मप ग॒म | नि॒ध निनि | सं ऽ– ‖

‖ संनि ऽसं | नि॒ पप | मग॒ ऽम | री सस |

| सम ऽम | मप ग॒म | नि॒ध निनि | सं ऽ– :‖

‖ मप ऽप | नि॒प निनि | सं संसं | रींनि संसं |

| निसं रींमं | रीं संसं | निसं ऽसं | नि॒ प– :‖

‖ संसं ऽसं | नि॒ पप | मग॒ ऽम | री स |

| सम ऽम | मप ग॒म | नि॒ध निनि | सं ऽ– :‖

वंशी

बंगश्री (शिवरंजनी)

केरवा-१२०

आरोहण - स रि ग॒ प ध सं **अवरोहण** - सं ध प ग॒ रि स

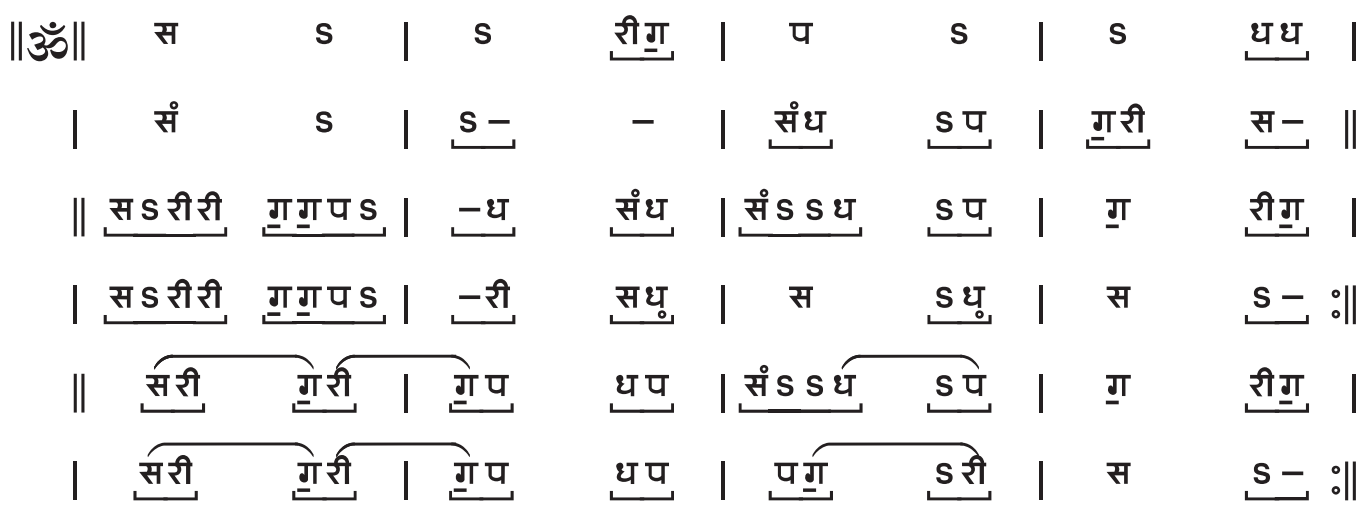

वंशी **गोवर्द्धन** **खेमटा- ३६०**

आरोहण - स री म प ध सं **अवरोहण** - सं ध प म री स

||ॐ|| सं ऽ ध , प ऽ म | सं ऽ ध , प ऽ म | री ऽ ऽ , म प ध | सं ऽ ऽ , ऽ – – ||

|| स ऽ स , री ऽ री | म ऽ म , प ऽ ध | सं ऽ ध , प ऽ म | ध ऽ प , म ऽ री |

| स ऽ स , री ऽ री | म ऽ म , प ऽ ध | सं ऽ ध , प ऽ ध | सं ऽ ऽ , ऽ – – :||

|| प ऽ म , प ऽ ध | सं ऽ रीं , सं ऽ ध | प ऽ म , म ऽ री | स ऽ री , म ऽ – |

| प ऽ म , प ऽ ध | सं ऽ रीं , सं ऽ ध | प ध प , म प म | री ऽ री , स ऽ – :||

|| ध ऽ सं , रीं ऽ – | ध ऽ सं , रीं ऽ – | रीं ऽ रीं , रीं ऽ रीं | रीं ऽ ऽ , ऽ – – |

| सं ऽ सं , ध ऽ ध | प ऽ प , म ऽ म | सं ध प , म री ऽ | स ऽ ऽ , ऽ – – :||

ध्वजारोपणम्

।। ॐ नमोऽस्तुते ध्वजाय । ॐ नमोऽस्तुते ध्वजाय ।। सकल-भुवन-जन-हिताय । सकल-भुवन-जन-हिताय ।।

।। विभव सहित विमल चरित बोधकाय मंगलाय ते सततम् ।।

।। ॐ नमोऽस्तुते ध्वजाय । ॐ नमोऽस्तुते ध्वजाय ।। ॐ ऽऽऽ ।।

वंशी **ध्वजारोपणम्** (रागेश्री) **दादरा - १२०**

आरोहण - स ग म ध नि सं **अवरोहण** - सं नि॒ ध म ग म री स

‖ॐ‖	सं	ऽ	सं	।	ध	ऽ	ध	।	ग	ऽ	मग	।	री	ऽ	स	:‖
	ओम्		न		मो		स्तु		ते		ध्व		जा		य	
‖	नि़	स	ग	।	म	ध	ध	।	ग	ग	मग	।	री	ऽ	स	:‖
	स	क	ल		भु	व	न		ज	न	हि		ता		य	
‖	नि़	स	ग	।	म	ध	ध	।	ग	म	ध	।	नि	सं	सं	।
	वि	भ	व		स	हि	त		वि	म	ल		च	रि	त	
।	गं	ऽ	गं	।	सं	ऽ	सं	।	गं	ऽ	गं	।	सं	ऽ	नि॒	।
	बो		ध		का		य		मं		ग		ला		य	
।	ध	ऽ	ग	।	म	ध	नि	‖	सं	ऽ	सं	।	ध	ऽ	ध	।
	ते		स		त	तं	ऽ		ओम्		न		मो		स्तु	
।	ग	ऽ	मग	।	री	ऽ	स	:‖	सं	ऽ	ऽ	।	ऽ	–	–	‖
	ते		ध्व		जा		य		ओम्	ऽ	ऽ		ऽ			

''ध्वजारोपणम्'' - रचना केवल संघ में भगवा ध्वजारोहण के लिए ही बजाना चाहिए।

विद्यालय तथा अन्य संस्थाओं के ध्वजारोहण के लिए इसका प्रयोग वर्जित है।

वंशी

कर्नाटकी (शिवरंजनी)

दादरा-१२०

आरोहण - स रि ग॒ प ध सं **अवरोहण** - सं ध प ग॒ रि स

‖ॐ‖ ग॒ स रि | स स स | ध़ स सरि | ग॒ स स |

| प ध प | ग॒ रि स | ग॒रि सध़ सरि | ग॒ स प |

| ग॒ स रि | स स स | ध़ स सरि | ग॒ स स |

| प ध प | ग॒ रि स | रि स ध़ | स – – ः‖

‖ प स ध | सं स स | ध स सं | रीं स स |

| ग॒ं स रीं | सं स स | पध संरीं ग॒ंरीं | सं स सं |

| प स ध | सं स स | ध स सं | रीं स स |

| ग॒ं स रीं | सं ध प | ग॒ स रि | स – – ः‖

वंशी **शिवराज : (भूप)** दादरा-१२०

आरोहण - स री ग प ध सं **अवरोहण** - सं ध प ग री स

॥ॐ॥ प पध प | ग गप ग | री रीग री | स ऽ – ॥

॥ स ऽ री | ग ऽ ग | री रीग री | प ऽ ग |

| प ऽ ध | सं ऽ ध | प ऽ ग | री ऽ गरी |

| स ऽ री | ग ऽ ग | री रीग री | प ऽ ग |

| ध ऽ प | ग ऽ री | स ऽ ऽ | ऽ – – :॥

॥ ध धसं धप | ग ग ग | प पध पग | री री री |

| ग गप गरी | स सरी सध़ | स री प | ग ग ग |

| ध धसं धप | ग ग ग | प पध पग | री री री |

| ग गप गरी | स सरी सध़ | स ऽ गरी | स – – :॥

॥ रीं ऽ संध | प ऽ ऽ | ध सं धप | ग ऽ ऽ |

| ध ऽ पग | री ऽ ऽ | ग प ग | सरी गप ध |

| रीं स संध | प स स | ध सं धप | ग स स |

| ध स पग | री स स | ग स री | स स स– :‖

‖ स गरी सधृ | पृ स पृ | धृ सरी गप | ग स ग |

| स रीग पध | सं स सं | ध पग रीस | धृ स धृ |

| स गरी सधृ | पृ स पृ | धृ सरी गप | ग स ग |

| प पध प | ग गप ग | री रीग री | स स – :‖

वंशी | **वेलावलि** (बिलावल) | दादरा-१२०

आरोहण - स री ग प ध नि सं **अवरोहण** - सं नि ध नि॒ ध प म ग म री स

‖ॐ‖	सं	ध	नि॒ध	|	प	म	ग	|	री	ग	प	|	म	री	स	|
|	ग	री	ग	|	प	ऽ	ऽ	|	ध	ऽ	नि	|	सं	ऽ	ऽ	|
|	सं	गं	रीं	|	सं	ध	प	|	संनि	रींसं	ध	|	प	म	ग	|
|	म	री	ग	|	प	ध	नि	|	सं	ऽ	ऽ	|	ऽ	–	–	:‖
‖	प	ऽ	प	|	नि	ध	नि	|	सं	ऽ	सं	|	सं	ऽ	ऽ	|
|	नि	ध	नि	|	सं	रीं	ऽ	|	सं	नि	ध	|	नि॒	ध	प	|
|	ध	नि	रीं	|	सं	नि	ध	|	नि॒	ध	प	|	ध	म	ग	|
|	म	री	ग	|	प	ध	नि	|	सं	ऽ	ऽ	|	ऽ	–	–	:‖

प्रशान्ति (तिलककामोद)

आरोहण - स री ग म प ध म प सं **अवरोहण** - सं प ध म ग स री ग स नि़ स

‖ॐ‖	प़	ऽ	नि़	|	स	ऽ	ऽ	|	री	ग	स	|	री	ऽ	ऽ	|
|	प	म	ग	|	स	री	ग	|	स	री	स	|	नि़	ऽ	ऽ	|
|	प़	ऽ	नि़	|	स	ऽ	ऽ	|	री	ग	स	|	री	ऽ	ऽ	|
|	प	म	ग	|	स	री	ग	|	स	ऽ	ऽ	|	ऽ	–	–	ः‖
‖	सं	ऽ	ऽ	|	सं	ऽ	रीं	|	सं	ऽ	प	|	ध	ऽ	म	|
|	ग	ऽ	री	|	प	म	ग	|	स	ऽ	री	|	म	प	नि	|
|	सं	ऽ	ऽ	|	सं	ऽ	रीं	|	सं	ऽ	प	|	ध	ऽ	म	|
|	ग	ऽ	री	|	प	म	ग	|	स	ऽ	नि़	|	स	–	–	ः‖
‖	नि़	ऽ	प़	|	स	ऽ	ऽ	|	ग	ऽ	री	|	प	म	ग	|
|	स	री	म	|	प	ऽ	ध	|	ग	री	म	|	ग	ऽ	स	|
|	नि़	ऽ	प़	|	स	ऽ	ऽ	|	ग	ऽ	री	|	प	म	ग	|
|	स	री	म	|	प	ऽ	ध	|	ग	ऽ	ऽ	|	स	–	–	ः‖

शारदा (दुर्गा)

आरोहण - स री म प ध सं **अवरोहण** - सं ध प म री स

‖ॐ‖	सं	सं	धप	| म	ध	पम	| री	म	री	| स	–	–	‖
‖	ध़	स	स	| री	ध़	स	| री	ऽ	म	| प	ऽ	ऽ	|
|	ध	प	प	| म	ऽ	री	| स	ऽ	ध़	| सरी	मप	ध	|
|	ध़	स	स	| री	ध़	स	| री	ऽ	म	| प	ऽ	ऽ	|
|	ध	प	प	| म	ऽ	री	| स	ऽ	स	| स	–	–	ः‖
‖	ध	सं	सं	| ध	प	प	| म	ध	प	| म	री	स	|
|	ध़	स	री	| म	प	ध	| रीं	ऽ	ऽ	| सं	–	–	|
|	ध	सं	सं	| ध	प	प	| म	ध	प	| म	री	स	|
|	ध़	स	री	| म	प	ध	| प	ऽ	ऽ	| प	–	–	ः‖
‖	रीं	ऽ	ध	| सं	–	–	| ध	सं	सं	| प	ध	सं	|
|	ध	ऽ	म	| प	–	–	| री	प	प	| री	म	प	|
|	म	ऽ	री	| स	–	–	| ध़	ऽ	स	| री	म	प	|
|	ध	सं	धप	| म	ध	पम	| री	म	री	| स	–	–	ः‖

वंशी	कलिंगड़ा	दादरा-१२०

आरोहण - स ऱी ग म प ध़ नि सं **अवरोहण** - सं नि ध़ प म ग ऱी स

‖ॐ‖	स	ग	म	|	प	ऽ	गम	|	प	ध़	म	|	प	ऽ	ऽ	|
|	नि	सं	नि	|	ध़	प	म	|	ग	म	ध़	|	प	ऽ	प	|
|	स	ग	म	|	प	ऽ	गम	|	प	ध़	म	|	प	ऽ	ऽ	|
|	नि	सं	नि	|	ध़	प	मग	|	ऱी	ग	ऱी	|	स	ऽ	ऽ–	:‖
‖	सं	नि	ऱीं	|	सं	ऽ	ऽ	|	ध़	नि	ध़	|	प	ऽ	ऽ	|
|	गम	ध़नि	संऱीं	|	सं	ऽ	सं	|	संनि	ध़प	मध़	|	प	ऽ	प	|
|	सं	नि	ऱीं	|	सं	ऽ	ऽ	|	ध़	नि	ध़	|	प	ऽ	ऽ	|
|	प	ध़	प	|	म	प	म	|	ग	मग	ऱी	|	स	ऽ	ऽ–	:‖

वंशी-शंख **देवदत्त** **दादरा-१२०**

‖ॐ‖	सं	संसं	सं	नि	निध	प	ग	प	निध	सं	–	–	‖
‖	सं	ऽ	सं	नि	ऽ	प	ग	प	सं	नि	ऽ	प	।
।	ग	ऽ	प	ग	ऽ	री	स	ऽ	ऽ	ऽ	–	–	।
।	सं	ऽ	सं	नि	ऽ	प	ग	प	सं	नि	ऽ	प	।
।	ग	ऽ	प	ग	ऽ	री	स	ऽ	ऽ	ऽ	–	स	‖
‖	प़	ऽ	प़	ग	ऽ	ग	प	–	–	प	सग	प	।
।	प़	ऽ	प़	ग	ऽ	ग	प̂	प̂	प̂	प	–	स	।
।	प़	ऽ	प़	ग	ऽ	ग	प	–	–	प	सग	प	।
।	प़	ऽ	प़	ग	ऽ	ग	स	ऽ	ऽ	ऽ	–	–	‖

‖ स ऽ स | ग ऽ ग | प ऽ ऽ | ऽ नि ध |

| सं ऽ ऽ | नि प ग | री ऽ ऽ | ऽ – – |

| स ऽ स | ग ऽ ग | प ऽ ऽ | ऽ नि ध |

| सं ऽ ऽ | नि प ग | ग प गरी | स – पृ ‖

‖ स ऽ ऽ | ग स पृ | सृ ऽ सृ | सृ ऽ पृ |

| स ऽ ऽ | ग स पृ | स ऽ ग | प – पृ |

| स ऽ ऽ | ग स पृ | सृ ऽ सृ | सृ – पृ |

| $\hat{\text{स}}$ – पृ | $\hat{\text{ग}}$ – पृ | $\hat{\text{स}}$ – $\hat{\text{स}}$ | $\hat{\text{स}}$ – – ‖

वंशी **इंद्रप्रस्थ** (श्यामकल्याण) दादरा-१२०

‖ॐ‖	ग प सं	नि ऽ –	प ग पध	नि ऽ ध |
|	म ऽ म	प – म	प सं नि	प नि ध |
|	प ग प	ग प सं	नि ऽ –	प ग पनि |
|	ध ऽ ध	म ऽ म	प ऽ म	प – – :‖
‖	निध पम प	सं ऽ –	नि प धसं	नि ऽ – |
|	धनि रींनि प	म ऽ –	ग म री	प ऽ – |
|	पम पनि सं	पम पनि ध	प म म	री ऽ – |
|	रीम पनि सं	निध पम री	री म नि़	१ स – – :‖
				२ स नि़स ‖
|	री ऽ –	म री रीप	म ऽ –	ध म म |
|	ग ऽ –	म नि़ स	रीग मप म	प ऽ – |
|	प नि नि	प सं निध	प ग म	री ऽ – |
|	ग प म	री म गरी	स ऽ स	१ स – नि़स :‖
				२ स – – ‖

‖ॐ‖	स	री	ग़	|	स	ऽ	स	|	नि़	ध़	ध़	|	स	ऽ	ऽ	|
|	स	री	ग़	|	म़	ध	म़	|	ग़	स	ध़	|	स	ऽ	ऽ –	:‖
‖	री	ग़	म़	|	ध	म़	ग़	|	म़	ध	ध	|	सं	ऽ	ऽ	|
|	सं	नि	ध	|	नि	ध	म़	|	ध	म़	ग़	|	स	ऽ	ऽ –	:‖
‖	सं	रीं	ग़ं	|	सं	नि	ध	|	नि	ध	म़	|	ग़	म़	ध	|
|	सं	ऽ	नि	|	ध	म़	ग़	|	ध	म़	ग़	|	स	ऽ	ऽ –	:‖

वंशी

मारवा

दादरा-१२०

आरोहण - स री ग म ध नि सं **अवरोहण** - सं नि ध म ग री स

||ॐ|| स नि़ री | ग म ग | ध ऽ ऽ | ऽ– म ध |

| नि ध म | ध म ग | री ऽ ऽ | ऽ– री ग |

| म ग म | ध नि ध | रीं ऽ ऽ | ऽ– नि ध |

| नि ध म | ध मग री | स ऽ ऽ | स – – :||

|| नि़ री ग | री – ग | नि़ री ग | री री ग |

| नि़ री ग | री – गम | ध ध मग | री – – |

| नि़ री ग | री – ग | नि़ री ग | री री ग |

| नि़ री ग | री – गम | ध मग री |[१] स – – :||

|[२] स – रीं ||

|| नि ध म | ध म ग | री री री | गम धनि रीं |

| नि ध म | ध म ग | म धनि रीं | रीं – रीं |

| नि ध म | ध म ग | री री री | गम धनि रीं |

| नि ध म | ध मग री | स – सस |[1] स– – रीं :||

|[2] स– – सनि़ ||

|| री ऽ गनि़ | री ऽ मनि | ध ऽ मग | री– – गम |

| ध ऽ निम | ध ऽ मग | म ध– संनि | रीं – गंरीं |

| सं ऽ रींनि | ध ऽ मध | नि ध मग | री– – रीं– |

| नि म नि | ध मग री | स – सस |[1] स– – सनि़ :||

|[2] स– – – ||

वंशी

तोड़ी

दादरा-१२०

आरोहण - स री॒ ग॒ म॒ ध॒ नि सं **अवरोहण** - सं नि ध॒ प म॒ ग॒ री॒ स

‖ॐ‖	स	ऽ	ऽ	|	–	ग॒	री॒	|	ग॒	ऽ	–	|	ग॒म॒	ग॒री॒	म॒	|
|	ग॒	ऽ	म॒	|	री॒	ग॒	री॒	|	स	–	री॒	|	नि़	स	ध़॒	|
|	स	ऽ	ऽ	|	–	ग॒	री॒	|	ग॒	ऽ	–	|	ग॒म॒	ग॒री॒	म॒	|
|	ग॒	ऽ	म॒	|	री॒	ग॒	री॒	|	स	ऽ	ऽ	|	ऽ	–	–	:‖
‖	स	ग॒	ग॒	|	–	री॒	ग॒	|	स	सरी॒	ग॒म॒	|	ग॒	–	म॒	|
|	स	ग॒	ग॒	|	–	री॒	ग॒	|	स	सरी॒	ग॒म॒	|	ध॒	ऽ	–	|
|	म	ध॒	ध॒	|	म	नि	नि	|	ध॒	–	नि	|	ध॒	म॒	ग॒	|
|	प	ऽ	म॒	|	ध॒	म॒	ग॒	|	री॒	ग॒	री॒	|	स	ऽ	–	:‖
‖	प	म॒	ग॒	|	ध॒	ऽ	ध॒	|	ध॒म॒	ध॒नि	म॒नि	|	ध॒	–	ध॒	|
|	ग॒	म॒	ध॒	|	सं	ऽ	सं	|	संनि	संरीं॒	ध॒रीं॒	|	सं	ऽ	–	|
|	ग॒	रीं॒	नि	|	ध॒	म॒ध॒	सं	|	नि	ध॒	म॒	|	ग॒	री॒ग॒	प	|
|	म॒	ग॒	री॒	|	स	नि	ध॒	|	म॒	ग॒	री॒	|	स	ऽ	ऽ–	:‖

वंशी — **बागेश्री** — **दादरा-१२०**

आरोहण - स ग॒ म ध नि॒ सं **अवरोहण** - सं नि॒ ध म प ध म ग॒ री स

‖ॐ‖	ध	ऽ	नि॒	ध	ऽ	म	ग॒	ऽ	मग॒	री	ऽ	स	|
|	नि़॒	स	ग॒	म	ध	नि॒	सं	ऽ	सं	सं	नि॒	सं	|
|	ध	ऽ	नि॒	ध	ऽ	म	ग॒	ऽ	मग॒	री	ऽ	स	|
|	नि़॒	स	म	ग॒	ऽ	री	स	ऽ	ऽ	ऽ	–	–	:‖
‖	म	ग॒	म	ध	ऽ	ध	पध	नि॒	ध	सं	ऽ	ऽ	|
|	ध	नि॒	सं	ग॒ं	ऽ	रीं	सं	ऽ	नि॒	ध	ऽ	ध	|
|	म	ग॒	म	ध	ऽ	ध	पध	नि॒	ध	सं	ऽ	ऽ	|
|	म	प	ध	म	ऽ	ग॒	री	ऽ	ऽ	स	ऽ	ऽ–	:‖

वंशी

कल्याण

दादरा-१२०

आरोहण - स री ग म̲ प ध नि सं **अवरोहण** - सं नि ध प म̲ ग री स

‖ॐ‖	नि̣	स	री	|	ग	स	स	|	म̲	स	स	|	री	स	स	|
|	ग	स	स	|	नि̣	स	री	|	स	स	स	|	स	–	–	‖
‖	स	स	ग	|	री	ग	री	|	नि̣	स	री	|	स	स	स	|
|	ग	स	म̲	|	प	म̲	ग	|	री	नि̣	री	|	ग	स	स	|
|	स	स	ग	|	री	ग	री	|	नि̣	स	री	|	स	स	स	|
|	ग	स	म̲	|	री	ग	री	|	स	स	स	|	स	–	–	ः‖
‖	नि	नि	नि	|	नि̣	नि̣	नि̣	|	ध̣	नि̣	री	|	स	स	स	|
|	ग	ग	ग	|	ग	नि̣	री	|	ग	म̲	ध	|	प	स	स	|
|	म̲	ध	ध	|	म̲	नि	नि	|	ध	स	सं	|	नि	स	ध	|
|	प	म̲	री	|	ग	स	री	|	स	स	स	|	स	–	–	ः‖
‖	प	म̲	पध	|	प	पम̲	पध	|	प	म̲	री	|	ग	स	री	|
|	स	नि̣	रीग	|	स	सनि̣	रीग	|	म̲	प	पम̲	|	ग	स	स	|
|	प	म̲	पध	|	प	पम̲	पध	|	प	म̲	री	|	ग	स	री	|
|	स	नि̣	रीग	|	स	सनि̣	रीग	|	निध	पम̲	गरी	|	स	–	–	ः‖

केतकी (तिलक श्याम)

‖ॐ‖	म॒	ऽ	म॒	|	प	ऽ	–	|	रीम॒	पध	म	|	ग	स	नि॒	|
|	नि	ध	प	|	म	ग	स	|	प	म	ग	|	स	री	स	|
|	नि॒	ऽ	–	|	म॒	ऽ	म॒	|	प	ऽ	–	|	रीम॒	पध	म	|
|	ग	स	नि॒	|	प	म	ग	|	स	ऽ	नि॒	|	स	–	–	ः‖
‖	री	ऽ	म॒	|	प	ऽ	–	|	रीम॒	पध	मप	|	नि	ऽ	–	|
|	नि	रीं	नि॒	|	ध	ऽ	ध	|	नि	ध	म॒	|	प	–	–	|
|	सं	ऽ	सं	|	सं–	ध	सं	|	नि॒	ऽ	ध	|	नि॒	ध	प	|
|	ध	ऽ	प	|	ध–	म॒	ध	|	प	ऽ	म॒	|	प	ऽ	–	‖
‖	रीम॒	पध	म	|	ग	स	नि॒	|	री	ऽ	री	|	री	ग	स	|
|	ग	ऽ	ग	|	म	री	गम॒	|	प	ऽ	प	|	प	ऽ	–	|
|	प	नि	रीं	|	नि	प	म	|	ग	ऽ	री	|	गप	म॒ध	प	|
|	म॒प	गम	री	|	प	म	ग	|	स	ऽ	नि॒	|	स	ऽ	–	ः‖

वंशी **कलावती** दादरा-१२०

आरोहण - स ग प ध नि॒ सं **अवरोहण** - सं नि॒ ध प ग स

॥ॐ॥	प	ग	स	|	नि़॒	ऽ	ध़	|	स	ग	प	|	ध	ऽ	ध	|
|	प	गप	धसं	|	नि॒	ऽ	ध	|	सं	नि॒	सं	|	ध	प	ग	|
|	प	ग	स	|	नि़॒	ऽ	ध़	|	स	ग	प	|	ध	ऽ	नि॒	|
|	सं	नि॒	ध	|	नि॒	ध	प	|	ध	प	गग	|	स	–	–	:॥
॥	स	ग	प	|	स	धध	प	|	ग	–	प	|	ग	प	ध	|
|	प	संसं	नि॒	|	ध	–	नि़॒	|	स	ग	प	|	स	धध	प	|
|	ग	–	प	|	ग	प	ध	|	प	संसं	नि॒	|	ध	–	नि॒	|
|	सं	प	सं	|	नि॒	ध	प	|१	ग	गप	गग	|	स	–	–	:॥
								|२	ग	गप	धनि॒	|	सं	–	सं	॥

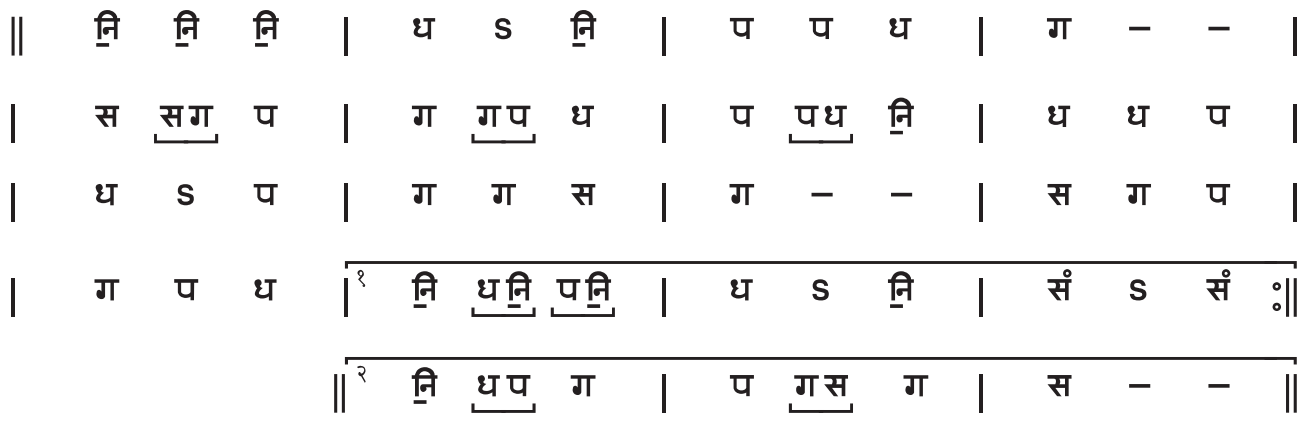

‖ नि॒ नि॒ नि॒	ध ऽ नि॒	प प ध	ग – – |
स सग प	ग गप ध	प पध नि॒	ध ध प |
ध ऽ प	ग ग स	ग – –	स ग प |
ग प ध	[1] नि॒ धनि॒ पनि॒	ध ऽ नि॒	सं ऽ सं :‖
	‖ [2] नि॒ धप ग	प गस ग	स – – ‖

वंशी **केशवश्री** दादरा-१२०

‖ॐ‖	री	ऽ	ऽ	|	–	पम॒	प	|	^म	ऽ	ऽ	|	–	ग	री	|
|	^ग	ऽ	ऽ	|	–	नि̣	स	|	री	ऽ	री	|	ग	ऽ	ग	|
|	म॒	प	म॒	|	री	म	ग	|	प̣	नि̣	री	|	प̣	म	ग	|
|	री	ऽ	ऽ	|	–	पम॒	प	|	^म	ऽ	ऽ	|	–	ग	री	|
|	^ग	ऽ	ऽ	|	–	नि̣	स	|	री	ऽ	री	|	ग	ऽ	ग	|
|	म॒	प	म॒	|	री	म	ग	|	प̣	नि̣	री	|	प̣	म	ग	|
|	री	ग	री	|	स	ऽ	–	‖	–	पम॒	प	|	^म	ऽ	ऽ	|
|	–	ग	री	|	^ग	ऽ	ऽ	|	–	नि̣	स	|	री	ऽ	री	|
|	ग	ऽ	ग	|	म॒	प	म॒	|	री	म	ग	|	प̣	नि̣	री	|
|	प̣	म	ग	|	^री	ऽ	ऽ –	‖	–	पम॒	प	|	^म	ऽ	ऽ	|
|	–	ग	री	|	ग	ऽ	–	|	प̣	नि̣	री	|	ग	ऽ	–	|

| प़ ऩ़ री | म़ स – | री प म | ग स – |

| म़ री ऩ़ | प़ ऩ़ध़ ऩ़ | स स – | ऩ़ ध़ ऩ़ |

| री स – | रीप मप म़ | प स – | गम रीग री |

| प़ ऩ़ री | प़ म ग | री ग री | स स – ‖

‖ – पम़ प | म स ग | ऩ़ स री | ग स – |

| गम रीग सरी | म़ स – | म़प गम रीग | प स – |

| रीग पध म़ध | म स ग | रीग मग रीम | ग स – |

| – पम़ प | री – – | – पम़ प | ^म स स |

| – ग री | ग स – | – ऩ़ स | री स री |

| ग स ग | पम़ गरी स ‖ | – पम़ प | ^म स स |

| – ग री | ग स – | ऩ़स रीग रीग | ऩ़स रीम गम |

| रीग ऩ़स रीप | म़प गम रीग | ऩ़स री ऩ़स | री ऩ़स री |

| – पम़ प | ^म स स | – ग री | ^ग स स |

| – नि़ स | री ऽ री | री प म | री म ग |

| री ग री | स ऽ – ‖ – पम॒ प | म̂ ऽ ऽ |

| – ग री | ग ऽ – | नि़ स री | पप प – |

| नि़ स री | मम म – | नि़ स ग | री ऽ री |

| नि़स रीम ग | – नि़स रीप | म – रीम | ग – सग |

| री – नि़री | स – पम॒ | – मग – | रीस – – |

| पम॒ प म | पम॒ प म | पम॒ प म | म̂ ऽ ऽ |

| – ग री | ग̂ ऽ – | – नि़ नि़ | स̂ ऽ – ‖

वंशी **आसावरी** **दादरा-१२०**

आसावरी

आरोहण - स री म प ध॒ नि॒ सं **अवरोहण** - सं नि॒ ध॒ प म ग॒ री स

‖ॐ‖	सं	ऽ	ऽ	|	ऽ	नि॒	ध॒	|	प	ऽ	ऽ	|	ऽ	पनि॒	ध॒प	|
|	म	ऽ	ऽ	|	ऽ	म	प	|	ग॒	ऽ	ऽ	|	ऽ	रीम	ग॒री	|
|	स	ऽ	ऽ	|	ऽ	री	म	|	प	ऽ	ऽ	|	ऽ	रीम	पनि॒	|
|	ध॒	ऽ	ऽ	|	ऽ	म	प	|	सं	ऽ	ऽ	|	ऽ	–	–	:‖
‖	ध़॒	स	स	|	ग॒री	स	नि़॒	|	ध़॒	स	स	|	री	म	प	‖
‖	ध॒	सं	सं	|	नि॒	ध॒	प	|	प	ऽ	नि॒	|	ध॒	म	प	|
|	री	म	प	|	म	प	ध॒	|	प	ध॒	रीं	|	सं	ऽ	सं	|
|	ध॒	सं	सं	|	नि॒	ध॒	प	|	प	ऽ	नि॒	|	ध॒	म	प	|
|	री	म	प	|	ध॒	म	प	|	ग॒	ऽ	री	|१	स	ऽ	ऽ–	:‖
												|२	स	रीम	प	‖
‖	ग॒̂	ग॒̂	ग॒	|	ग॒̂	ग॒̂	ग॒	|	स	री	ग॒री	|	स	री	म	|
|	प̂	प̂	प	|	प̂	प̂	प	|	म	प	ध॒प	|	म	प	ध॒	|
|	सं	ग॒ं	रीं	|	सं	ऽ	प	|	प	नि॒	ध॒	|	प	ऽ	री	|
|	री	मप	ग॒	|	स	री	नि़॒	|	स	ऽ	ऽ	|	रीम	पध॒	मप	:‖

वंशी — **आरुणी** (भैरवी) — त्रिताल-१२०

आरोहण - स री॒ ग॒ म प ध॒ नि॒ सं   **अवरोहण** - सं नि॒ ध॒ प म ग॒ री॒ स

||ॐ|| स ऽ ऽ – | स ऽ ऽ – | स ऽ ऽ ऽ | – – – – ||

|| स ऽ ग॒ स | प ऽ प प | प ध॒ नि॒ ध॒ | प म ग॒ ऽ |

| प ऽ ऽ ऽ | प ऽ ग॒ म | प नि॒ ध॒ प | म ग॒ री॒ ऽ |

| स ऽ नि़॒ री॒ | स ऽ ऽ – | १ नि़॒ ऽ ऽ – | नि़॒ ऽ ऽ – |

| स ऽ ऽ ऽ | – – – – :|| २ स ऽ ऽ – | स ऽ ऽ – |

| स ऽ ऽ ऽ | – – – – || स ऽ ध़॒ ऽ | नि़॒ स ऽ ऽ |

| री ऽ ग॒ ऽ | री॒ स ऽ ऽ | नि़॒ स ग॒ म | प ऽ ऽ प |

| ध॒ प म ग॒ | म प ऽ ऽ | ग॒ म ग॒ री॒ | स ऽ ऽ – |

| १ री ऽ ऽ – | री ऽ ऽ – | स ऽ ऽ ऽ | – – – – :||

|| २ स ऽ ऽ – | स ऽ ऽ – | स ऽ ऽ ऽ | – – – – ||

|| स ग॒ म ग॒ | री॒ ऽ स ऽ | ग॒ म प ध॒ | प ऽ म ऽ |

| री॒ म ध॒ सं | ग॒ प ध॒ नि॒ | म ग॒ प ऽ | ध॒ ध॒ नि॒ ऽ |

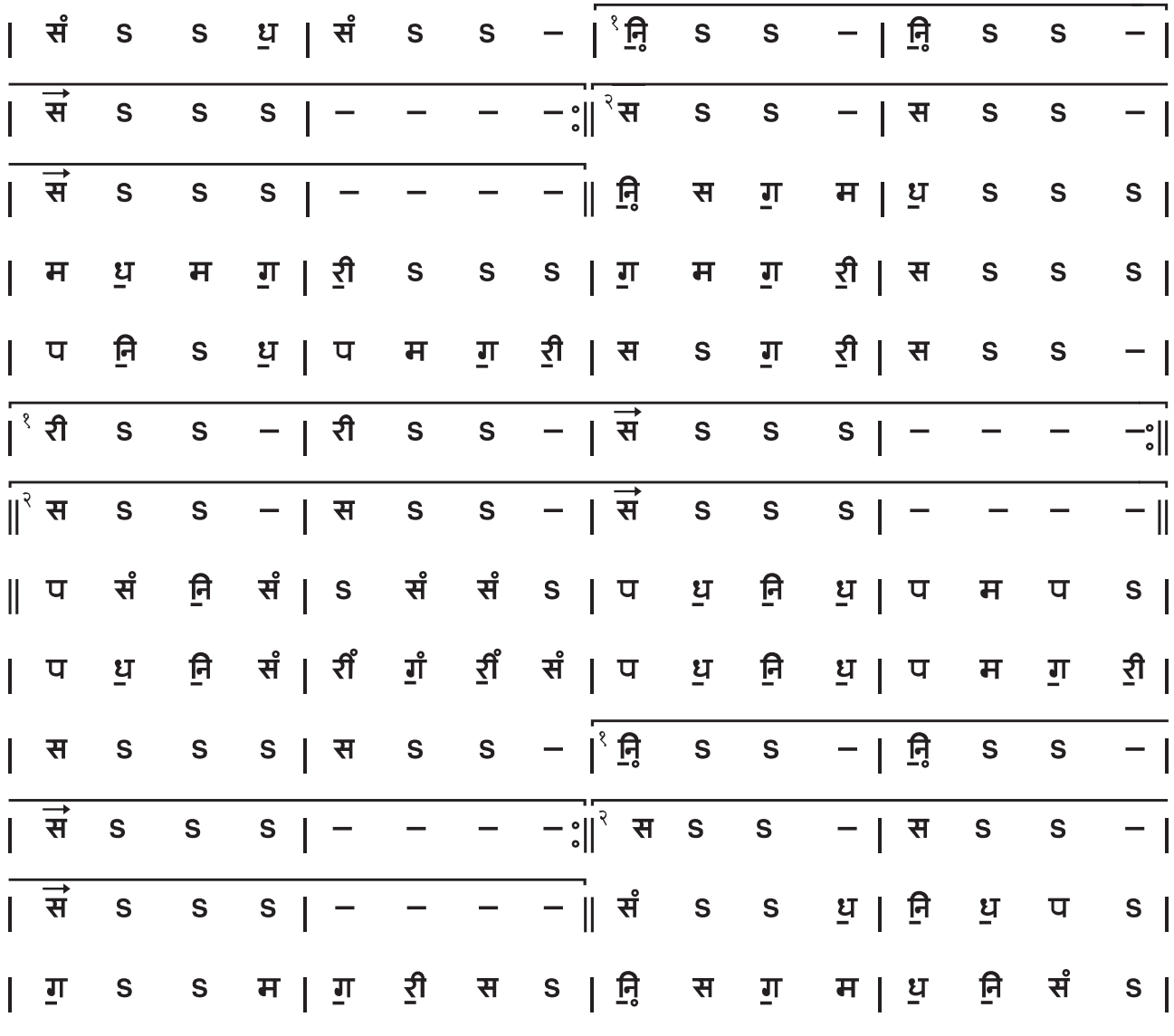

| सं ऽ ऽ ध | सं ऽ ऽ – | १ नि़ ऽ ऽ – | नि़ ऽ ऽ – |

| स ऽ ऽ ऽ | – – – –:‖ २ स ऽ ऽ – | स ऽ ऽ – |

| स ऽ ऽ ऽ | – – – – ‖ नि़ स ग म | ध ऽ ऽ ऽ |

| म ध म ग | री ऽ ऽ ऽ | ग म ग री | स ऽ ऽ ऽ |

| प नि ऽ ध | प म ग री | स ऽ ग री | स ऽ ऽ – |

| १ री ऽ ऽ – | री ऽ ऽ – | स ऽ ऽ ऽ | – – – –:‖

‖ २ स ऽ ऽ – | स ऽ ऽ – | स ऽ ऽ ऽ | – – – – ‖

‖ प सं नि सं | ऽ सं सं ऽ | प ध नि ध | प म प ऽ |

| प ध नि सं | रीं गं रीं सं | प ध नि ध | प म ग री |

| स ऽ ऽ ऽ | स ऽ ऽ – | १ नि़ ऽ ऽ – | नि़ ऽ ऽ – |

| स ऽ ऽ ऽ | – – – –:‖ २ स ऽ ऽ – | स ऽ ऽ – |

| स ऽ ऽ ऽ | – – – – ‖ सं ऽ ऽ ध | नि ध प ऽ |

| ग ऽ ऽ म | ग री स ऽ | नि़ स ग म | ध नि सं ऽ |

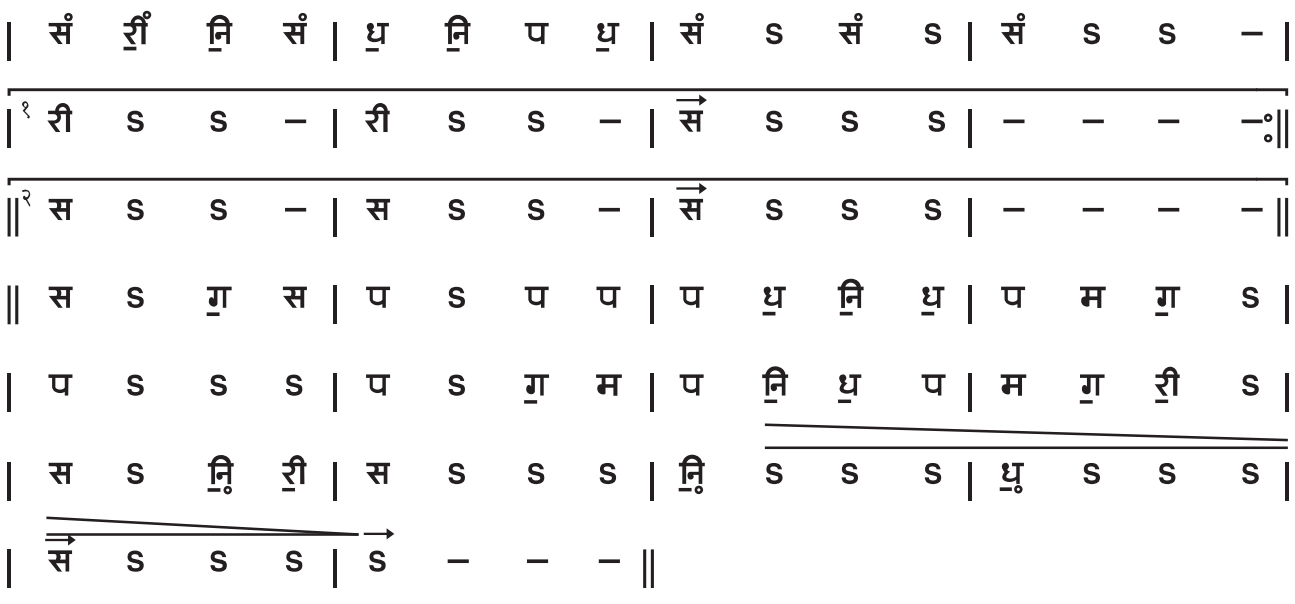

| सं रीं नि सं | ध नि प ध | सं ऽ सं ऽ | सं ऽ ऽ – |

|[1] री ऽ ऽ – | री ऽ ऽ – | स ऽ ऽ ऽ | – – – –:||

||[2] स ऽ ऽ – | स ऽ ऽ – | स ऽ ऽ ऽ | – – – – ||

|| स ऽ ग स | प ऽ प प | प ध नि ध | प म ग ऽ |

| प ऽ ऽ ऽ | प ऽ ग म | प नि ध प | म ग री ऽ |

| स ऽ नि़ री | स ऽ ऽ ऽ | नि़ ऽ ऽ ऽ | ध़ ऽ ऽ ऽ |

| स ऽ ऽ ऽ | ऽ – – – ||

वंशी

समर्पण (बागेश्री-२)

दादरा-१२०

आरोहण - स ग॒ म ध नि॒ सं **अवरोहण** - सं नि॒ ध म प ध म ग॒ री स

‖ॐ‖	स	म	ग॒	म	ग॒	म	ध	ऽ	ऽम	ध	ऽ	–	ǀ
ǀ	प	ध	नि॒	ध	म	प	ग॒	ऽ	ऽरी	ग॒	ऽ	–	ǀ
ǀ	म	ग॒	म	ध	नि॒	ध	सं	ऽ	ऽनि॒	सं	ऽ	–	ǀ
ǀ	सं	नि॒	ध	म	ग॒	री	स	ऽ	ऽ	ऽ	–	–	:‖
‖	स	म	मम	ग॒	–	म	स	ग॒म	ग॒	म	ऽ	–	ǀ
ǀ	स	ध	ध	नि॒	ऽ	ध	म	पध	मप	ग॒	ऽ	–	ǀ
ǀ	म	ग॒	म	ध	ऽ	ध	म	नि॒	ध	सं	ऽ	ऽसं	ǀ
ǀ	नि॒	नि॒	नि॒	ध	ऽ	म	ग॒	ग॒	री	स	ऽ	–	:‖
‖	–	ग॒म	धनि॒	सं	सं	सं	सं	नि॒	ध	नि॒	ऽ	–	ǀ
ǀ	–	नि॒ध	मध	नि॒	नि॒	नि॒	नि॒	ध	म	ध	ऽ	–	ǀ
ǀ	–	धम	ग॒म	ध	नि॒	सं	ग॒ं	ऽ	रीं	नि॒	ऽ	ध	ǀ
ǀ	सं	सं	सं	नि॒	ध	मनि॒	ध	म	ग॒री	स	–	–	:‖

वंशी

केशव : (भैरवी)

दादरा-१२०

आरोहण - स री॒ ग॒ म प ध॒ नि॒ सं **अवरोहण** - सं नि॒ ध॒ प म ग॒ री॒ स

||ॐ|| प़ स स | ध़॒ सस स | प़ स स | ध़॒ – स ||

|| प ऽ प | प ऽ प | पध॒ नि॒ ध॒ | प ऽ म |

| ग॒ ग॒ ग॒ | सग॒ मप म | ग॒ ऽ री | ग॒ ऽ ऽ |

| स ऽ ग॒ | ग॒म म॒ म | ग॒री ग॒ री॒ | १ स ऽ स :||

| २ स ऽ – ||

|| ग॒ ग॒ म | ध॒ ऽ नि॒ | सं ऽ रीं॒ | सं ऽ ऽ |

| नि॒ नि॒ नि॒ | सं ऽ सं | नि॒ध॒ नि॒ ध॒ | प ऽ ऽ– |

| ग॒ ग॒ म | ध॒ ऽ नि॒ | संरीं गं॒ रीं | सं ऽ ऽ |

| नि॒ नि॒ नि॒ | सं ऽ सं | नि॒ध॒ नि॒ ध॒ | प ऽ ऽ– ||

‖ प ऽ प | प ऽ प | धप ध प | म ऽ ग |

| स ऽ ग | म प म | री ग री | ग ऽ ऽ |

| स ऽ ग | गम म म | गरी ग री | स ऽ स ‖

‖ प ऽ प | प ऽ प | पध नि ध | प ऽ म |

| ग ग ग | सग मप म | ग ऽ री | ग ऽ ऽ |

| स ऽ ग | गम म म | गरी ग री | स ऽ – ‖

‖ स री नि | स ऽ ऽ ‖